Postal Reg. No.GDP -45/2020-2022

अल्लाह तआला का आदेश

يٰٓاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا لَا تَخُوْنُوا اللّٰهَ وَالرَّسُوْلَ وَتَخُوْنُوْٓا اَمٰنٰتِكُمْ وَاَنْتُمْ تَعْلَمُوْنَ

(सूरः अन्फ़ाल : 28)

अनुवाद : हे वे लोगों जो ईमान लाए हो अल्लाह और उसके रसूल से खयानत न करो अन्यथा तुम उसके नतीजा में स्वयं अपनी अमानतों से खयानत करने लगोगे जबिक तुम (उस खयानत को) जानते होंगे।

بِسۡمِ اللّٰہِ الرَّحۡمٰنِ الرَّحِیۡمِ نَحۡمَدُہٗ وَنُصَلِّیۡ عَلٰی رَسُوۡلِہِ الۡکَرِیۡمِ وَعَلٰی عَبۡدِہِ الۡمَسِیۡحِ الۡمَوۡعُوۡد

وَلَقَدۡ نَصَرَکُمُ اللّٰہُ بِبَدۡرٍ وَّاَنۡتُمۡ اَذِلَّۃٌ

वर्ष- 9
अंक 4

साप्ताहिक क़ादियान

बदर

Weekly
BADAR Qadian
HINDI

मूल्य
600 रुपए
वार्षिक

संपादक
शेख़ मुजाहिद अहमद

उप संपादक
सय्यद मुहियुद्दीन फ़रीद

13 रजब 1445 हिज्री कमरी, 25 सुलह 1403 हिज्री शम्सी, 25 जनवरी 2024 ई.

अख़बार-ए-अहमदिया

रूहानी ख़लीफ़ा इमाम जमाअत अहमदिया हज़रत मिर्ज़ा मसरूर अहमद साहिब ख़लीफ़तुल मसीह ख़ामिस अय्यदहुल्लाह तआला बिनस्रिहिल अज़ीज सकुशल हैं। अलहम्दो लिल्लाह। अल्लाह तआला हुज़ूर को सेहत तथा सलामती से रखे तथा प्रत्येक क्षण आप पर अपना फ़जल नाज़िल करता रहे। आमीन

ख़ुत्बः जुमअः

हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम ने अपनी लेखनी और अपने इर्शादात में असंख्य स्थानों पर अपने आने का उद्देश्य और इस ज़माने में किसी मुस्लेह के आने की ज़रूरत का वर्णन फ़रमाया है

"असल हक़ीक़त यह है कि किसी शख़्स के दावा नबुव्वत पर सबसे पहले ज़माना की ज़रूरत देखी जाती है। फिर यह भी देखा जाता है कि वह नबियों के निर्धारित किए गए समय पर आया है या नहीं। फिर यह भी सोचा जाता है कि ख़ुदा ने उसकी सहायता की है या नहीं। फिर यह भी देखना होता है कि दुश्मनों ने जो आरोप लगाए हैं उन आरोपों का पूरा-पूरा उत्तर दिया गया या नहीं। जब ये समस्त बातें पूरी हो जाएं तो मान लिया जाएगा कि वह इन्सान सच्चा है अन्यथा नहीं"(हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम)

"निसन्देह एक आसमानी मुस्लेह की ज़रूरत है जो दुबारा यक़ीन प्रदान करके ईमान की जड़ों को पानी देवे। और इस तरह पर बदी और गुनाह से छुड़ा कर नेकी और रास्ती की तरफ़ मोड़ देवे"

मुख़ालेफ़ीन की मुख़ालेफ़त के बावजूद जमाअत के लोगों के ईमान को अल्लाह तआला ने मज़बूत फ़रमाया और फ़रमाता चला जा रहा है

पुराने अहमदियों के लिए भी चिंता का विषय है कि उनको भी तब्लीग़ की तरफ़ तवज्जा देनी चाहिए

चाहे वे पुराने अहमदी हैं या नए, अल्लाह तआला से यह दुआ करनी चाहिए कि हमारा ईमान मज़बूत रहे और हमें निशान भी कोई दिखा और हिदायत देता रहे

बुर्कीना फासो के शहीदों ने अपनी जान दे कर वहां के अहमदियों का ईमान कमज़ोर नहीं किया बल्कि प्रतिदिन उनके ईमान में मज़बूती आ रही है

अल्लाह तआला न केवल लोगों पर हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम की सच्चाई साबित फ़रमाता है बल्कि ख़िलाफ़त-ए-अहमदिया के निज़ाम के साथ अपनी सहायता के नज़्ज़ारे भी दिखाता है और ख़ाब के ज़रीया पहले ही उन्हें मज़बूत कर देता है

कहाँ तो ईसाइयत दुनिया में अपने झंडे गाड़ने की बातें करती थी और कहाँ अब ईसाई हज़रत मुहम्मद रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के झंडे के नीचे आ रहे हैं। ये सब देखकर भी इन तथाकथित मज़हब के ठेकेदारों की आँखें नहीं खुलतीं तो फिर उनका मुआमला ख़ुदा तआला के साथ है

समझते हैं कि यह जंग वहीं तक महिदूद रहेगी लेकिन उनके जो अक़लमंद हैं वे भी कहने लग गए हैं कि यह केवल इन इलाक़ों में महिदूद नहीं रहेगी बल्कि बाहर भी फैलेगी और उनके मुल्कों तक भी पहुंच जाएगी

फिलिस्तीन के उत्पीड़ित लोगों के लिए दुआ की पुनः तहरीक

श्रीमान अब्दुस्सालाम आरिफ़ साहिब मुरब्बी सिलसिला, श्रीमान मुहम्मद क़ासिम ख़ान साहब आफ़ कैनेडा, श्रीमान अब्दुल करीम कदसी साहिब,श्रीमान मियां रफ़ीक़ अहमद गोन्दल साहिब और श्रीमती नसीमा लईक साहिबा की विशेषताओं का वर्णन और नमाज़ जनाज़ा ग़ायब

ख़ुत्बः जुमअः सय्यदना अमीरुल मो'मिनीन हज़रत मिर्ज़ा मसरूर अहमद ख़लीफ़तुल मसीह पंचम अय्यदहुल्लाहो तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़, दिनांक 24 नवंबर 2023 ई. स्थान - मस्जिद मुबारक इस्लामाबाद सिर्रे (यू.के)

أَشْهَدُ أَنْ لَّا إِلٰهَ إِلَّا اللّٰهُ وَحْدَهٗ لَا شَرِيكَ لَهٗ وَأَشْهَدُ أَنَّ مُحَمَّدًا عَبْدُهٗ وَ رَسُوْلُهٗ۔ أَمَّا بَعْدُ فَأَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنَ الشَّيْطٰنِ الرَّجِيْمِ۔ بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ۔ اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعَالَمِيْنَ۔ اَلرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ۔ مٰلِكِ يَوْمِ الدِّيْنِ ۔اِيَّاكَ نَعْبُدُ وَ اِيَّاكَ نَسْتَعِيْنُ۔ اِهْدِنَا الصِّرَاطَ الْمُسْتَقِيْمَ۔صِرَاطَ الَّذِيْنَ اَنْعَمْتَ عَلَيْهِمْ ۔ غَيْرِالْمَغْضُوْبِ عَلَيْهِمْ وَلَاالضَّآلِّيْنَ

हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम ने अपनी तहरीरात और अपने इर्शादात में असंख्य स्थानों अपने आने की ग़रज़ और इस ज़माने में किसी मुस्लेह के आने की ज़रूरत का वर्णन फ़रमाया है।

और यह साबित फ़रमाया है कि आप का अल्लाह तआला की तरफ़ से आना ऐन वक़्त की ज़रूरत था और अल्लाह तआला की सुन्नत और आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम की भविष्यवाणियों के अनुसार है। इसलिए आप फ़रमाते हैं कि "अतमाम-ए-हुज्जत (समझाने के अंतिम प्रयास कर पूर्ण करने) के लिए मैं यह ज़ाहिर

जमील अहमद नासिर प्रिंटर एवं पब्लिशर ने फ़ज़्ल-ए-उमर प्रिंटिंग प्रेस क़ादियान में छपवा कर दफ़्तर अख़बार बदर से प्रकाशित किया। प्रौपराइटर - **निगरान बदर बोर्ड क़ादियान**

करना चाहता कि .. ख़ुदाए तआला ने इस ज़माना को तारीक पा कर और दुनिया को ग़फ़लत और कुफ़्र और शिर्क में ग़र्क़ देखकर ईमान और सिदक़ और तक़्वा और रास्तबाज़ी को ज़ायल होते हुए मुशाहिदा करके मुझे भेजा है कि ता वह दुबारा दुनिया में इलमी और अमली और अख़लाक़ी और ईमानी सच्चाई को क़ायम करे औरता इस्लाम को उन लोगों के हमला से बचाए जो फ़लसफ़ी और नेचरियत और इबाहत और शिर्क और दहरियत के लिबास में इस इलाही बाग़ को कुछ नुक़्सान पहुंचाना चाहते हैं। अतः हे हक़ के तालबो सोच कर देखो कि क्या यह वक़्त वही वक़्त नहीं है जिसमें इस्लाम के लिए आसमानी मदद की ज़रूरत थी। क्या अभी तक तुम पर यह साबित नहीं हुआ कि पिछले सदी में जो तेरहवीं सदी थी क्या-क्या सदमात इस्लाम पर पहुंच गए और ज़लालत के फैलने से क्या-क्या नाक़ाबिल-ए-बर्दाश्त ज़ख़म हमें उठाने पड़े। क्या अभी तक तुमने मालूम नहीं किया कि किन किन आफ़ात ने इस्लाम को घेरा हुआ है। क्या उस वक़्त तुम को यह ख़बर नहीं मिली कि किस क़दर लोग इस्लाम से निकल गए किस क़दर ईसाइयों में जा मिले किस क़दर दहरिया और तबह हो गए और किस क़दर शिर्क और बिद्दत ने तौहीद और सुन्नत की जगह ले ली और किस क़दर इस्लाम के रद्द के लिए किताबें लिखी गईं और दुनिया में शाय की गईं। अतः तुम अब सोच कर कहो कि क्या अब ज़रूरत नहीं थी कि ख़ुदा तआला की तरफ़ से इस सदी पर कोई ऐसा शख़्स भेजा जाता जो बैरूनी हमलों का मुक़ाबला करता। यदि ज़रूर थी तो तुम जान बूझ कर नेअमत को रद्द मत करो और उस शख़्स से मुनहरिफ़ मत हो जाओ जिसका आना इस सदी पर इस सदी के मुनासिब-ए-हाल ज़रूरी था और जिसकी इबतेदा से नबी करीम ने ख़बर दी थी।"

(आईना कमालात-ए-इस्लाम, रुहानी ख़ज़ायन भाग 5 पृष्ठ 251 से 253)

फिर आप अलैहिस्सलाम ने किसी आने वाले शख़्स की सच्चाई के परखने के मयार का वर्णन करते हुए फ़रमाते हैं कि "किसी शख़्स के सच्चा मानने के लिए यह ज़रूरी नहीं कि इस की खुली खुली ख़बर किसी आसमानी किताब में मौजूद भी है। यदि यह शर्त ज़रूरी है तो किसी नबी की नबुव्वत साबित नहीं होगी।

असल हक़ीक़त यह है कि किसी शख़्स के दावा-ए-नबुव्वत पर सबसे पहले ज़माना की ज़रूरत देखी जाती है। फिर यह भी देखा जाता है कि वह नबियों के निर्धारित करदा वक़्त पर आया है या नहीं। फिर यह भी सोचा जाता है कि ख़ुदा ने उस की सहायता की है या नहीं। फिर यह भी देखना होता है कि दुश्मनों ने जो एतराज़ उठाए हैं इन एतराज़ात का पूरा पूरा जवाब दिया गया या नहीं। जब ये समस्त बातें पूरी हो जाएं तो मान लिया जाएगा कि वह इन्सान सच्चा है अन्यथा नहीं।

अब साफ़ ज़ाहिर है कि ज़माना अपनी ज़बान-ए-हाल से फ़र्याद कर रहा है कि इस वक़्त इस्लामी तफ़र्रुक़ा के दूर करने के लिए और बैरूनी हमलों से इस्लाम को बचाने के लिए और दुनिया में गुम-शुदा रूहानियत को दुबारा क़ायम करने के लिए

बिलाशुबा एक आसमानी मुस्लेह की ज़रूरत है जो दुबारा यक़ीन बख़श कर ईमान की जड़ों को पानी देवे। और इस तरह पर बदी और गुनाह से छुड़ा कर नेकी और रास्ती की तरफ़ रुजू देवे।

अतः ऐन ज़रूरत के वक़्त में मेरा आना ऐसा ज़ाहिर है कि मैं ख़्याल नहीं कर सकता कि बजुज़ सख़्त द्वेष के कोई इस से इंकार कर सके। और दूसरी शर्त अर्थात यह देखना कि नबियों के निर्धारित करदा वक़्त पर आया है या नहीं। यह शर्त भी मेरे आने पर पूरी हो गई है क्योंकि नबियों ने यह भविष्यवाणी की थी कि जब छटा हज़ार ख़त्म होने को होगा तब वह मसीह मौऊद ज़ाहिर होगा। अतः क़मरी हिसाब की दृष्टि से छटा हज़ार जो हज़रत आदम के ज़हूर के वक़्त से लिया जाता है मुद्दत हुई जो ख़त्म हो चुका है और शमसी हिसाब की दृष्टि से छटा हज़ार ख़त्म होने है।" वह भी हो चुका है। "अतिरिक्त उसके हमारे नबी सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने यह फ़रमाया था कि हर एक सदी के सिर पर एक मुजद्दिद आएगा जो दीन को ताज़ा करेगा और अब इस चौधवीं सदी में से इक्कीस साल गुज़र चुके हैं।' जब आप अलैहिस्सलाम ने फ़रमाया यह उस वक़्त की बात है। "और बाईसवां गुज़र रहा है। अब क्या यह इस बात का निशान नहीं कि वह मुजद्दिद आगया।"

(लैक्चर लाहौर, रुहानी ख़ज़ायन भाग 20 पृष्ठ 194-195)

ग़ैर लोग मानें या न मानें। हमारे मुख़ालेफ़ीन हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम की सच्चाई को तस्लीम करें या न करें लेकिन यह तो पुकार पुकार कर अब ख़ुद भी कह रहे हैं और हर जगह यह कहा जा रहा है कि इस्लाम में किसी महदी और मुस्लेह की ज़रूरत है जो इस्लाम की क्षति को सँभाले लेकिन जो आने वाला है वह इन भविष्यवाणियों के अनुसार आया और जो वक़्त की ज़रूरत के अनुसार आया उसको मानने को तैयार नहीं।

इसी तरह हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम ने दावा ही नहीं किया बल्कि अपनी सच्चाई की सहायता में बेशुमार निशानात भी पेश फ़रमाए हैं। इन सबका, समस्त का वर्णन करना तो यहां मुम्किन नहीं है। इसलिए एक जगह आप अलैहिस्सलाम फ़रमाते हैं कि "एक अज़ीमुश्शान निशान यह है कि आज से तेईस बरस पहले बराहीन-ए--अहमदिया में यह इलहाम मौजूद है कि लोग कोशिश करेंगे कि इस सिलसिला को मिटा दें और हर एक मकर काम में लाएँगे परंतु मैं इस सिलसिला को बढ़ाऊँगा और कामिल करूँगा और वह एक फ़ौज हो जाएगी। और क़ियामत तक उनका ग़लबा रहेगा और मैं तेरे नाम को दुनिया के किनारों तक शौहरत दूँगा और जौक़ दर जौक़ लोग दूर से आएँगे और हर एक तरफ़ से माली मदद आएगी। मकानों को वसीअ करो कि यह तैयार आसमान पर हो रही है। अब देखो "फ़रमाते हैं कि "देखो किस ज़माना की यह भविष्यवाणी है जो आज पूरी हुई। यह ख़ुदा के निशान हैं जो आँखों वाले उनको देख रहे हैं परंतु जो अंधे हैं उनके नज़दीक अभी तक कोई निशान ज़ाहिर नहीं हुआ।"

(नुज़ूलुल-मसीह, रुहानी ख़ज़ायन भाग 18 पृष्ठ 384-385)

आज भी जमाअत अहमदिया की तरक़्क़ी और हर वर्ष लोगों का लाखों की संख्या में जमाअत में शामिल होना, क़ुर्बानियों में बढ़ना आप की सच्चाई का सबूत है। आज दुनिया का कोई मुल्क ऐसा नहीं जहां आप का पैग़ाम न पहुंचा हो, जहां आप के पैग़ाम की वजह से सईद रूहों को इस्लाम की तरफ़ तवज्जा पैदा न हुई हो और उन्होंने इस्लाम क़बूल नहीं किया हो बल्कि कुछ जगह ऐसे वाक़ियात हैं कि अल्लाह तआला ने ख़ुद लोगों की राहनुमाई फ़रमाई है और वह जमाअत में हुए।

मुख़ालेफ़ीन की मुख़ालिफ़त के बावजूद अफ़राद-ए-जमात के ईमान को अल्लाह तआला ने मज़बूत फ़रमाया और फ़रमाता चला जा रहा है।

अतः आज भी जो हम अल्लाह तआला की सहायता के नज़्ज़ारे देख रहे हैं यह एक अहमदी के लिए मज़बूती ईमान का ज़रीया हैं। कुछ लोगों के वाक़ियात में इस वक़्त पेश करना चाहता हूँ।

बाबाईयो इस्लाम बैक (Boboev Islombek) साहिब रूसी हैं किर्गीज़ स्तान के हैं। कहते हैं कि मेरा ताल्लुक़ किर्गीज़स्तान में काशग़र कुशलाक से है और कहते हैं मेरे ख़त लिखने की वजह यह है कि मैं हज़रत इमाम महदी अलैहिस्सलाम की बैअत करते हुए हक़ीक़ी इस्लाम अर्थात जमाअत में शामिल हो रहा हूँ। अहमदियत में शामिल होने की वजह यह है कि हज़रत इमाम महदी अलैहिस्सलाम ने इस्लाम की ख़ूबियों को बहुत उम्दा तरीक़ पर वर्णन किया है। मुझे यक़ीन हो गया है कि केवल इमाम महदी ही इस तरह इस्लाम की ख़ूबियों को वर्णन कर सकते हैं। फिर लिखते हैं कि मेरे लिए दुआ करें कि अल्लाह तआला मुझे मुत्तक़ी बना दे और दस शरायत-ए-बैअत पर अमल करने वाला बना दे। यह एक दूर-दराज़ के इलाक़े में बैठे हुए शख़्स का वर्णन है। अब एक जगह नहीं हर मुल्क में यह हाल है।

कांगो का एक सूबा मनियमा (Maniema) है। वहां एक जगह है रोडिका (Rodika) वहां एक ईसाई दोस्त फ़िरोज़ माजिक साहिब हैं। इन तक जमाअत के पमफ़लट पहुंचे जिस में हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम की आमद और जमाअत अहमदिया में निज़ाम-ए-ख़िलाफ़त की नेअमत का वर्णन था तो इस को पढ़ कर उनकी काया पलट गई। कहने लगे मैं इसी इस्लाम की तलाश में था। बैअत करके अहमदियत में शामिल हो गए। इसी तरह एक और दोस्त हुसैन साहिब ने भी जमाअत के पमफ़लेट पढ़ कर न केवल बैअत कर ली बल्कि उन्होंने आगे तब्लीग़ भी शुरू कर दी और उनकी तब्लीग़ से ही अब तक जब यह रिपोर्ट आई थी पाँच लोग उन्होंने अहमदियत में दाख़िल कर लिए। इस तरह लोग केवल ख़ुद ही नहीं शामिल हो रहे बल्कि तब्लीग़ भी कर रहे हैं और ये पुराने अहमदियों के लिए भी चिंता का विषय है कि उनको भी तब्लीग़ की तरफ़ तवज्जा देनी चाहिए।

फिर तनज़ानिया का एक रीजन है श्यानगा। वहां की एक जमाअत है मूंगालांगा (Mwangalanga) यहां जमाअत में जब अहमदियत का आग़ाज़ हुआ तो शुरू में अहमदी अहबाब दरख़्तों के साय में नमाज़ें अदा किया करते थे। इसी दौरान वहां पर एक शख़्स मुहम्मद फ़ोनिगूँगा (Fungagunga) ने जमाअत की शदीद मुख़ालेफ़त शुरू कर दी और चंद अहबाब से मिल कर प्रसिद्ध कर दिया कि यह अहमदी तो मुस्लमान ही नहीं हैं और हम मुस्लमान जल्द ही यहां मस्जिद बनाएंगे। इस शख़्स ने एक साहब-ए-हैसियत महिला की ज़मानत भी ले ली कि वह मस्जिद के लिए रक़म देगी। दूसरी तरफ़ जब एक मुख़लिस अहमदी रमज़ान साहिब ने अपनी ज़मीन मस्जिद के लिए वक़्फ़ की तो उस शख़्स ने बहुत कोशिश की कि किसी तरह यह ज़मीन ग़ैर अज़ जमाअत मुस्लमानों को मिल जाए परंतु वह अहमदी साबित-क़दम रहे यहां तक कि जमाअत की मस्जिद बनना शुरू हुई और पाया-ए-तकमील तक पहुंच गई। इस अस्ना में जमाअत अहमदिया की तब्लीग़ इस मुख़ालिफ़ शख़्स के घर तक पहुंची। अब यह मुख़ालेफ़त कर रहा है और इसके घर भी अहमदियत का पैग़ाम पहुंच गया और

अल्लाह तआला ने इस की बीवी और बच्चों को अहमदियत क़बूल करने की तौफ़ीक़ बख़शी और अब वह अपनी मुख़ालेफ़त मैं अकेला रह गया है। अब यदि इस शख़्स में अक़ल हो और इस जैसे बहुत से ऐसे लोग हैं तो उनके लिए यही निशान काफ़ी है कि बावजूद मुख़ालेफ़त के अल्लाह तआला ने इस के बीवी बच्चों के दिल में हक़ीक़ी इस्लाम का जोश पैदा किया और उसका कोई ज़ोर नहीं चला। यह ईमान, यह तबदीली कोई इन्सान पैदा कर सकता है। हरगिज़ नहीं। यह सिर्फ़ अल्लाह तआला के विशेष फ़ज़ल से ही होता है।

फिर एक और मिसाल है ईमान की मज़बूती की, अल्लाह तआला की सहायता की अर्जनटाइन अब एक दूर से अमरीका के इलाक़े में बिल्कुल दूसरा इलाक़ा है। एक अफ़्रीक़ा चल रहा है। कोई रूस चल रहा है। कभी अमरीका है। वहां की एक महिला हैं मारीला (Mariela) साहिबा उन्होंने इस्लाम क़बूल किया था लेकिन वह मुस्लमानों के अमली व्यवहार की वजह से इस्लाम से दूर जा रही थीं। अहमदी नहीं हुई थीं। इस्लाम क़बूल कर लिया था। जब वह जमाअत अहमदिया से परिचित हुई और वह मिशन हाऊस आकर हमारी अरबी और इस्लाम क्लासिज़ में शामिल होती रहीं और कुछ माह बाद बैअत कर के जमाअत में शामिल हो गईं। कहने लगी कि मुझे बैअत कर के संतोष हुआ है क्योंकि मैंने जमाअत की तालीमात और अमल में समानता पाई है और हक़ीक़ी प्रेम की फ़िज़ा महसूस की है

इस में हर एक को चाहे नया आने वाला हो ख़िदमत का अवसर दिया जाता है और किसी किस्म की discrimination नहीं है, फ़र्क़ नहीं है। उनकी बेटी जोकि ग़ैरमुस्लिम है वह सुन्नी इस्लामिक सैंटर में पढ़ रही थी, यह उनका हाईस्कूल था। अरबों ने वहां पैसा ख़र्च किया हुआ है। जब स्कूल की ऐडमिनिस्ट्रेशन को उस की माता के जमाअत में शामिल होने का पता चला तो उस पर दबाओ डालना शुरू कर दिया और जमाअत के ख़िलाफ़ प्रोपेगंडा करते रहे। जब स्कूल वालों को इलम हुआ कि उनकी बेटी ने अपने स्कूल के प्राजैक्ट के तहत अपनी ज़ाती ख़ाहिश से जमाअत के मिशन हाऊस के लिए सजावट के piecesभी तैयार किए हैं तो इस पर स्कूल की इंतेज़ामिया सख़्त नाराज़ हुई और इस बच्ची को कहा कि जमाअत अहमदिया की हिमायत मैं तुम्हारे लिए स्कूल में मुश्किलात होंगी। तुम और तुम्हारी माता जमाअत से अलैहदा हो जाओ। जब उसकी माता को इलम हुआ तो उसने फ़ौरन बग़ैर किसी तरद्दुद के ख़ुद ही अपनी बेटी का इस इस्लामी स्कूल से तबादला करवा लिया और कहने लगी कि अब मुझे भी और मेरी बेटी को भी तसकीन है कि हमें कोई भी हमारे मज़हब के आधार पर तंग नहीं करेगा। मैंने जमाअत को हक़ ख़्याल करते हुए क़बूल किया है तो फिर मैं ग़ैरों के सामने भी ख़ुशी और फ़ख़र से इस का इज़हार करूँगी चाहे उन्हें बुरा ही लगे। यह ईमान है जो उन लोगों में पैदा हो रहा है।

बुख़ारा जो रशिया का इलाक़ा है वहां एक मुख़लिस अहमदी सुन्नत सुल्तानोविच साहिब हैं उज़बेकिस्तान से उनका ताल्लुक़ है और रशिया में मुलाज़मत करते हैं। कहते हैं कि मैं अकेला ही अहमदी हूँ और अपनी पत्नी और बच्चे को इस्लाम अहमदियत की तालीमात से परिचित कराता रहता हूँ। शौक़ है कि मेरे बीवी बच्चे भी अहमदी हो जाएं। बहुत दुआ करता हूँ कि अल्लाह तआला उन्हें भी इस्लाम अहमदियत के नूर से मुनव्वर करे। कहते हैं मैं ने ख़ाब में देखा कि हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम मेरी ख़ाब में आए और मेरे दिल पर सिर रख कर नियमित सूरह इख़लास की तिलावत फ़र्मा रहे हैं जिससे मुझे बहुत ही दिल का सुकून मिला। इसी तरह मैंने ख़ाब में देखा कि मैं जन्नत में अपनी पत्नी और बेटे के साथ मौजूद हूँ और वहां मैंने हज़रत मूसा अलैहिस्सलाम और हज़रत ईसा अलैहिस्सलाम को भी देखा। मुझे इस ख़ाब से यह संतोष मिला कि जन्नत से मुराद इस्लाम अहमदियत है जिसकी तालीम जन्नत नुमा है और अल्लाह तआला अपने फ़ज़ल से मेरी पत्नी और बेटे को भी इस जन्नत में लेकर आएगा। अभी इस ख़ाब को चंद दिन हुए थे कि अल्लाह तआला ने मेरे उन्नीस वर्ष के बेटे दियार बैग संत का दिल इस्लाम अहमदियत के लिए खोल दिया और उसने बैअत कर ली है। मेरे लिए बड़ा ख़ुशी का दिन था। अलफ़ाज़ में वर्णन करना मुम्किन नहीं। अल्लाह तआला इसी तरह मेरी पत्नी के दिल को भी खोले और इस्लाम अहमदियत की आग़ोश में ले आए। तो यह जोश और जज़बा है उन लोगों का यू. के की एक नौ-मुबाइना हैं। कहती हैं। मेरा मुस्लमान बैकग्रांऊड है। कट्टर सुन्नी फ़ैमिली से ताल्लुक़ था। कहती हैं हमें यही बताया गया था कि सुन्नी इस्लाम ही असल इस्लाम है। एक रोज़ कहती हैं मैंने अपनी यूनीवर्सिटी के क़रीब जलनघम्मीं मस्जिद नासिर में अज़ान सुनी तो मैंने घर आकर अपने वालिद को बहुत ख़ुश हो कर बताया कि हमारी यूनीवर्सिटी के क़रीब एक ख़ूबसूरत मस्जिद भी है। इस पर मेरे वालिद साहिब ने तहक़ीक़ की तो पता चला कि यह तो अहमदियों की मस्जिद है। बहुत सख़्ती से मुझे मना किया कि यह मस्जिद क़ादियानियों की है और वे ख़त्म नबुव्वत पर यक़ीन नहीं रखते। झूठ है यह इल्ज़ाम। और उन्होंने अपना नबी बनाया हुआ है इत्यादि इत्यादि। इसलिए तुम इस मस्जिद से दूर रहना। कहती हैं मैंने शुरू में तो उनकी बात मान ली लेकिन मेरा दिल नहीं माना। मुझे लगा कि मुझे अहमदियों के मुताल्लिक़ मज़ीद तहक़ीक़ करनी चाहिए लेकिन दूसरी तरफ़ घर वालों का ख़ौफ़ भी था कहीं पकड़ी न जाऊं और फिर वह नाराज़ न हों। यू-नीवर्सिटी में चंद अहमदी विद्यार्थियों से भी मुलाक़ात हुई जिनसे इस्लाम अहमदियत के मुताल्लिक़ तफ़सीली गुफ़्तगु होती रही। पहले मैं उनको यह साबित करने की कोशिश करती रही कि सुन्नी इस्लाम ही असल इस्लाम है लेकिन इस किस्म की गुफ़्तगु से मेरा अहमदियत के मुताल्लिक़ रिसर्च करने का शौक़ बढ़ता रहा। फिर मुझे जमाअत अहमदिया की वेबसाइट का पता चला, वहां भी मुझे काफ़ी वीडीयोज़ देखने को मिलीं और काफ़ी मवाद पढ़ने को मिला। मेरे इस्लाम के मुताल्लिक़ कुछ सवालात थे जिनके मुझे कहीं से तसल्ली बख़श जवाबात नहीं मिलते थे लेकिन जब मैंने जमाअत अहम-दिया के लिटरेचर का मुताला किया तो मुझे मेरे मतलूबा सवालात के जवाब मिलने शुरू हो गए। अब अहमदी नौजवानों को भी ग़ौर करना चाहिए कि यदि वे सही तरह इलम हासिल करने की कोशिश करें तो उत्तर मिल जाऐंगे बजाय उसके कि ग़ैरों से मुतास्सिर होते रहीं। कुछ नौजवान मुतास्सिर हो भी जाते हैं। कहती हैं फिर मैंने दुआएं शुरू कर दें कि अल्लाह तआला मुझे कोई निशान दिखलाएं। यह भी हिदायत की तरफ़ आने का और सही रास्ता तलाश करने का एक बहुत बड़ा ज़रीया है।

चाहे वह पुराने अहमदी हैं या नए, अल्लाह तआला से यह दुआ करनी चाहिए कि हमारा ईमान मज़बूत रहे और हमें निशान भी कोई दिखा और हिदायत देता रहे।

तो बहरहाल कहती हैं इस अरसा में मैं ने बहुत सी ख़्वाबें देखें। एक ख़ाब में मैं ने देखा कि मैं दरिया के किनारे पर हूँ और दूसरे किनारे पर हज़रत ख़लीफ़तुल मसीह अल्-राबे रहमहुल्लाह किसी हाल में तशरीफ़ ले जा रहे हैं। मैं दरिया उबूर करके दूसरे किनारे पर जाना चाहती हूँ लेकिन पानी का बहाव तेज़ है। इस पर हज़रत ख़लीफ़तुल मसीह अल् राबे रहमहुल्लाह फ़रमाते हैं कि ख़ुदा अपने बंदे को तन्हा नहीं छोड़ता। इस के साथ ही वह दरिया ख़त्म हो जाता है और मैं दूसरी तरफ़ पहुंच जाती हूँ। इसी तरह एक ख़ाब में उन्होंने मुझे भी देखा और इस हालत में देखा जिससे वे बहुत प्रभावित हुईं। एक और ख़ाब में यह कहती हैं मैंने अपनी दादी को देखा वह मुझे कह रही थीं कि जब इस्लामाबाद जाओ तो मुझे भी याद रखना। कहती हैं ये समस्त ख़्वाबें मेरे लिए वाज़िह निशान थीं। इसलिए मैंने बैअत कर ली। अब इस तरह उंगली पकड़ कर अह-मदियत की तरफ़ लेकर आना और दिल में ईमान की मज़बूती पैदा करना यह अल्लाह तआला के ताईदी निशान नहीं तो और किया है।

फिर देखें अफ़्रीक़ा का एक मुलक है इस के गांव में अल्लाह तआला ने इस शख़्स को अहमदियत क़बूल करने की तौफ़ीक़ देने के बाद फिर किस तरह ईमान में मज़बूती अता फ़रमाई बुर्कीना फासो के डोरी रीजन की जमाअत टॉक्का (Taka) के एक अहमदी ख़ादिम जाबिर साहिब खेतों में काम कर रहे थे। दहश्तगरदों ने पकड़ लिया और कहा जिस तरह कल हमने महदी आबाद में अहमदियों को मारा है तुम्हें भी क़तल कर देंगे। फिर उनका मोबाइल फ़ोन ले के चैक किया तो इस में से जमाअती मुबल्ले-ग़ीन की तक़ारीर मिलीं। तक़ारीर सुन कर कहने लगे कि हम इन सबकी तलाश में हैं क्योंकि यह रेडियो पर अहमदियत की तब्लीग़ करते हैं। इस तरह अहमदी ख़ादिम से इसके वालिद साहिब का पता पूछा और कहा कि कल हम तुम्हारे गांव आएँगे। जाबिर साहिब को जब यह पता लगा तो वह घर आए और अपने वालिद और घर वालों को लेकर उसी रात मुहम्मद आबाद जो डोरी में है और जहां जमाअत की आबादी है वहां आ गए और अब घर-बार और सामान इत्यादि सब कुछ छोड़ छाड़ दिया। अगले रोज़ दहश्तगर्द उनके गांव आए और एक शख़्स से ज़बरदस्ती उनके घर का पता मालूम कर के वहां पहुंचे। पूरे घर की तलाशी ली। सामान उठा कर बाहर फेंक दिया और यह साथ कहते रहे कि यहां जो भी अहमदी है उसे क़तल कर देंगे। बहरहाल वह तो वहां से आ गए थे और इस वक़्त जमाअती इंतेज़ाम के तहत वहां मुहम्मद-आबाद में रहते हैं।

बुर्कीना फासो के शहीदों ने अपनी जान देकर वहां के अहमदियों का ईमान कमज़ोर नहीं किया बल्कि हर-रोज़ उनके ईमान में मज़बूती आ रही है।

अब इन ग़रीब लोगों ने अपना थोड़ा बहुत जो भी सामान था, घर में घर-बार और जो रोज़ी का सामान था जिस पर उनका इन्हिसार था सब कुछ छोड़ दिया लेकिन अपना ईमान नहीं छोड़ा। इन लोगों को अहमदियत क़बूल किए अभी चंद साल गुज़रे हैं लेकिन ईमान में तरक़्क़ी करते चले जा रहे हैं। यह अल्लाह तआला की ज़ात के इलावा कोई और हस्ती नहीं जो इस तरह उनके ईमानों को मज़बूत कर रही है।

एक तरफ़ तो अहमदियत की मुख़ालेफ़त के बावजूद ईमान की मज़बूती के हम नज़्ज़ारे देखते हैं और दूसरी तरफ़ यह भी कसरत से नज़र आता है कि किस तरह ख़ुदा तआला लोगों के दिलों को हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम के मानने के लिए खोल

रहा है। आप अलैहिस्सलाम ने फ़रमाया यह वक़्त है तलाश करो अल्लाह तआला भी फिर इस में मदद करता है।

सेंट्रल अफ़्रीक़ा में एक जगह है यलोके (Yaloke) वहां मुअल्लिम कहते हैं कि हम तब्लीग़ के लिए गए तो वहां डेढ़ सौ अफ़राद पुरुष और महिलाएं तब्लीग़ सुनने के लिए जमा हो गए। कहते हैं मैंने हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम की आमद के निशानात प रतक़रीर की और बाद में सवाल-ओ-जवाब किए गए। वहां के सेंट्रल इमाम सइमसह उम्र (Samasa Omer) साहिब ने बात करने की इजाज़त चाही और अपनी बात का आग़ाज़ इस आयत से किया कि जाए कि (बनी इसराईल : 82)और फिर कहा कि आपने जो पैग़ाम दिया है हमने न कभी सुना और न ही रिसर्च की। अलहमदो लिल्लाह कि आज हमारे गांव में सच्चाई आ गई है। आंहुज़ूर सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने जो फ़रमाया है कि इमाम महदी अलैहिस्सलाम जब आए तो फ़ौरन क़बूल कर लेना आज मैं ख़ुद और मेरे चालीस साथी जमाअत अहमदिया मुस्लिमा में दाख़िल होते हैं और कहने लगे अल्लाह तआला हमें इस सच्चाई पर क़ायम रहने की तौफ़ीक़ दे। तो इस तरह लोग शामिल हो रहे हैं।

फिर अल्लाह तआला मुख़ालेफ़ीन को भी किस तरह जमाअत की तरफ़ खींच कर ले आता है इस के भी बेशुमार वाक़ियात हैं माली

की कोली गोरों रीजन का है, वहां की एक जगह है नमना। कहते हैं इस साल वहां कोली कौरवो जमाअत ने अपना रीजनल जलसा आयोजित किया तो इस से पहले रेडियो पर ऐलान किए गए। इस गांव के दूर होने की वजह से कभी रेडियो उधर सुनाई देता है कभी नहीं देता लेकिन इन दिनों रेडियो वहां सुनाई दिया और एक ग़ैर अहमदी दोस्त सिद्दीक़ जरा साहिब ने सुनके जलसा में शमूलीयत का इरादा कर लिया। उनके साथ उनके एक दोस्त थे जो उनको अहमदियत की तालीमात को न सुनने पर क़ाइल करते रहते थे। कहते रहते थे कि अहमदियत को न सुना करो यह तो काफ़िर लोग हैं लेकिन बहरहाल उनके इसरार पर ये दोनों दोस्त जलसा पर आगए और इसी किलो मीटर का फ़ासिला मुसीबतों से तै किया। सड़कें तो वहां हैं नहीं। बहरहाल पूछते पूछाते जलसा से दो दिन पहले जलसा की जगह पर पहुंच गए। मुक़ामी सदर साहिब ने और अहबाब जमाअत ने उनकी मेहमान-नवाज़ी की। जलसा से क़बल ही उनको अहम-दियत के बारे में परिचय हो गया। जलसा के दिनों में उन्होंने तक़ारीर सुनी। बाजमाअत तहज्जुद की अदायगी और मैंबरान जमाअत का आपस में प्यार और ख़ुलूस का ताल्लुक़ देखा तो बहुत मुतास्सिर हुए। जलसा के आख़िरी दिन जब उनको बतौर मेहमान अपने तास्सुरात का इज़हार करने के लिए बुलाया गया तो उन्होंने सारा वाक़िया वर्णन करते हुए अहमदियत क़बूल करने का ऐलान किया। इस के फ़ौरन बाद उनके साथी ने कुछ वर्णन करना चाहा तो उसने कहा कि हक़ीक़त में मैं अपने दोस्त को बदज़न करने आया था लेकिन अब मैं ख़ुद अहमदियत का क़ायल हो गया हूँ और उसने भी अहमदियत क़बूल कर ली।

कांगो बराज़ा वेल यह भी अफ़्रीक़ा का एक मुलक है। एक नौजवान सी साहिब ने एफ़ ए की, हाइर सैकण्डरी स्कूल की तालीम मुकम्मल की और एक गांव के कैथोलिक मिशनरी से ईसाइयत की तालीम हासिल करनी शुरू कर दी और इस मिशनरी तालीम के बाद उसने चर्च के ज़रीया से ही यूनीवर्सिटी जाना था। इस दौरान उसका राबिता हमारे मुक़ामी मुबल्लिग के साथ हो गया। कहते हैं उस को हमने तब्लीग़ शुरू की। उसने देखा कि जमाअत अहमदिया के दलायल का उसके पास, न ही उसके टीचर मिशनरी के पास कोई जवाब है। इस तरह उसने ईसाई मिशनरी बनने की बजाय बैअत करके जमाअत अहमदिया में शमूलियतयत इख़तेयार कर ली और अब बतौर दाई इलाल्लाह अहमदियत की तब्लीग़ कर रहा है

सेनेगाल का रीजन तांबा कोन्डा है। वहां के एक इलाक़े में तब्लीग़ का प्रोग्राम बनाया गया। कहते हैं वहां चंद साल क़बल एक शख़्स ने अपने बीवी बच्चों के साथ अहमदियत क़बूल की थी लेकिन गांव के लोग मुख़ालेफ़त कर रहे थे। इस साल गांव के चीफ़ और इमाम से बार-बार मुलाक़ात कर के तब्लीग़ी प्रोग्राम बनाया गया। गिर्द--ओ-नवाह के गांव के चीफ़ और इमामों के साथ आम लोगों को भी दावत दी गई। मोअल्लेमीन ने इस्लाम की मौजूदा हालत, मसीह मौऊद की ज़रूरत, और क्या इस ज़माने में ज़रूरत भी है? मसीह मौऊद की आमद और इस्लाम की तरक़्क़ी में जमाअत अहमदिया का किरदार के विषय पर तक़ारीर कीं। इसके बाद सवाल-ओ-जवाब हुए। क़रीबी गांव से जो लोग आए थे कहने लगे कि उन्होंने अहमदियत का नाम हमसाया मुल्क गेम्बया में सुना था परंतु वे अक़ायद इत्यादि के मुताल्लिक़ नहीं जानते थे। आज इस जलसा में जमाअत के अक़ायद के मुताल्लिक़ वज़ाहत सुनकर बग़ैर किसी सवाल के उन्होंने अहमदियत में शमूलियत का ऐलान किया। इस के बाद गांव के इमाम ने खड़े हो कर अहमदियत की सच्चाई का ऐलान किया। इसके दिहात के चीफ़ ने अपनी फ़ैमिली के साथ अहमदियत में दाख़िल होने का ऐलान किया और कहा कि यदि किसी को भी समस्त हाज़ेरीन में से कोई शक है तो यहां वर्णन कर दे अन्यथा बाद में कोई हीला बहाना नहीं होगा। इसके बाद समस्त हाज़ेरीन ने अपने ख़ानदानों समेत अहम-दियत में दाख़िल होने का ऐलान किया। इस तरह अल्लाह तआला पकड़-पकड़ कर भी लाता है।

उज़बेकिस्तान जो रशियन स्टेटस में से एक मुलक है। वहां मुस्लेमूमंसूर साहिब नौ-मुबाइन हैं। कहते हैं पहले मैं इमाम अबू-हनीफ़ा मसलक से ताल्लुक़ रखता था। एक दिन मेरा दोस्त अरबी सीखने की उद्देश्य से मुझे एक अहमदी उस्ताद के पास ले गया। मैं अरबी सीखने के साथ साथ अपने उस्ताद से इस्लाम के मुताल्लिक़ भी सवालात पूछता रहा। मुझे इतने अच्छे जवाबात मिलते कि मेरा दिल संतुष्ट हो जाता था।

यदि सही जवाब लेने हैं, दिल को लगने वाले मंतक़ी जवाब भी हों और हक़ीक़त भी हो तो वह सिवाए जमाअत अहमदिया के कहीं और मिल नहीं सकते क्योंकि हमें हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम ने यह उत्तर दिए हैं, उनकी वज़ाहत फ़रमाई है।

कहते हैं जब मैं उनसे पूछता कि इन जवाबात के असल चश्मे कहाँ हैं? इस चश्मे का ताल्लुक़ कहाँ से है? असल कहाँ से मिल सकते हैं? तो हमारे उस्ताद ने हमें जमाअत अहमदिया का परिचय करवाया। कहते हैं मेरा दिल तो पहले ही संतुष्ट हो चुका था। इसलिए मैं बैअत कर के जमाअत में शामिल हो गया। मेरे लिए दुआ करें कि अल्लाह तआला मुझे इस राह में साबित-क़दम रखे।

अल्लाह तआला न केवल लोगों पर हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम की सच्चाई साबित फ़रमाता है बल्कि ख़िलाफ़त अहमदिया के निज़ाम के साथ अपनी सहायता के नज़्ज़ारे भी दिखाता है और ख़ाब के ज़रीया पहले ही उन्हें मज़बूत कर देता है।

सेनेगाल में रीजन तांबा कोन्डा है। वहां के मुअल्लिम तब्लीग़ी दौरे पर गए। कहते हैं मोअल्लेमीन ने यहां तब्लीग़ शुरू की, जमाअत का परिचय किराया तो एक दोस्त मुहम्मद जियालो ने कहा क्या आप अहमदिया जमाअत से हैं? मुअल्लिम साहिब ने इस्बात में जवाब दिया तो जियालो साहिब ने कहा कि पिछले रोज़ ही उसने ख़ाब में देखा कि एक शख़्स उसके ख़ाब में आए और इस से हैं इस्लाम के समस्त फ़िर्क़ों में से फ़िर्क़ा अहमदिया ही सच्चा और सही इस्लाम का अनुवादक है।

तुम इस में दाख़िल हो जाओ। अब अगले ही दिन आप लोग आ गए हैं तो बहरहाल इस में कुछ सच्चाई यक़ीनन होगी। मुअल्लिम साहिब ने इस को मोबाइल से खलिफ़ा की तस्वीरें दिखाएंगे। मेरी तस्वीर भी उनको दिखाई और मेरी तस्वीर देखकर उन्होंने बताया कि यही शख़्स है जो मुझे ख़ाब में आया था और यह भी कहा था कि मैं जमाअत अहमदिया का ख़लीफ़ा हूँ। यह वाक़िया सुना कर उस की आँखें नमनाक हो गईं और वहीं अपने ख़ानदान समेत उन्होंने बड़े जज़बाती हो कर अहमदियत में दाख़िल होने का ऐलान किया। अब वह तब्लीग़ भी कर रहे हैं। फिर ख़ाब के ज़रीया ही क़बूल-ए--अहमदियत का एक और वाक़िया है कांगो किंशासा बिल्कुल एक और मुल्क और कई सैंकड़ों मीलों का फ़ासिला है। वहां एक जगह के सदर जमाअत बासिम मुनीर साहिब हैं। ईसाइयत से अहमदी हुए थे। कहते हैं जब जमाअत के मुबल्लग़ीन यहां तब्लीग़ के लिए आए तो मैं इस्लाम को दहशतगर्द मज़हब समझता था। यही प्रोपेगंडा है नाँ ग़ैर मुस्लिमों का इस्लाम के बारे में। लेकिन जिस इस्लाम की बातें अहमदी मुब-ल्लिग़ करते थे वह मेरे लिए अजीब था और ईसाइयत से मैं वैसे ही उकता चुका था। ये सब देखकर मैं बहुत परेशान था। इसलिए मैंने दुआ करनी शुरू कर दी। इसी दौरान एक रात मैंने ख़ाब देखा कि एक बुज़ुर्ग आकर कहते हैं कि उनको छोड़ दो और इस तरफ़ आ जाओ। इस बात की ताबीर अल्लाह तआला ने मुझे यह समझाई कि तुम ईसाइयत को तर्क कर के अहमदियत की तरफ़ आ जाओ। इसलिए मैंने बैअत कर के अहमदियत में शमूलियत इख़तेयार कर ली।

चाड अफ़्रीक़ा का एक और मुल्क है और यहां का एक और वाक़िया है। अब्दुल्लाह मुहम्मद मूसा जो अरब क़बीले से ताल्लुक़ रखते हैं, कहते हैं हमारे यहां के मुबल्लिग़ इंचार्ज ने लिखा कि चंद माह पहले हमारे लोकल मुअल्लिम की उनसे मुलाक़ात हुई। मुअल्लिम साहिब ह्यूमैनिटी फ़रस्ट के काम के सिलसिला में उनके इलाक़े में भी गए। जब मुअल्लिम साहिब दूसरी दफ़ा उनके इलाक़े में गए तो उनको हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम की किताब इस्लामी उसूल की फ़िलोसफ़ी जो अरबी अनुवाद में थी पढ़ने के लिए दी। कुछ हफ़्तों के बाद अब्दुल्लाह साहिब दारुल हकूमत चाड में आए और मुअल्लिम से संपर्क किया और वफ़ात-ए-मसीह के मुताल्लिक़ सवालात किए और कहा कि मैंने हयात-ए-मसीह के मुताल्लिक़ उल्मा से बहुत पूछा है लेकिन किसी ने तसल्ली बख़श जवाब नहीं दिया। रात को मुअल्लिम साहिब के पास रहा। रात-भर

जमाअत अहमदिया और हज़रत-ए-अक़्दस मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम के विषय में प्रश्न करते रहे और कहा कि अल्लाह तआला से दुआ करता हूँ कि अल्लाह तआला मेरी राहनुमाई फ़रमाए। सुबह फ़ज्र की नमाज़ के बाद थोड़ी देर के लिए सोए और अचानक बेदार हो गए और मुअल्लिम साहिब को कहने लगे जब मैं सौ रहा था तो ख़्वाब में यह आवाज़ मैंने सुनी।يَّاۡتِیۡ مِنۡۢ بَعۡدِی اسۡمُہٗۤ اَحۡمَدُ (अल् सफ़ : 7)मुअल्लिम साहिब ने जब इस आयत के मुताल्लिक़ बताया कि इस में यह भी है कि यह तो बानी जमाअत अहमदिया की सदाक़त की दलील है तो इस पर अब्दुल्लाह साहिब कहने लगे ख़ुदा तआला ने मेरी राहनुमाई कर दी है और अरबी पढ़े लिखे थे। बहरहाल उन्होंने बताया कि इस आयत का एक यह भी मतलब है तो वह अहमदी हो गए।

आई लौंडज़ बिल्कुल अमरीका के इलाक़े का एक जज़ीरा है। वहां के मुबल्लिग़ लिखते हैं कि हरमन लाजर (Hermon Lajar) साहिब एक कॉलेज में पढ़ाते थे। क़ुरआन-ए-करीम की एक आयत का मार्शली ज़बान में अनुवाद करने की ज़रूरत थी तो उसके लिए मुबल्लिग़ साहिब ने उनसे समपर्क किया। अनुवाद के लिए जब वह उनके पास गए और उन्हें जब ईआह् मालूम हुआ कि यह क़ुरआन-ए-करीम की आयत है तो घबरा गए कि इस्लाम उनके लिए बिल्कुल नया था। कहने लगे कि किसी भी मज़हबी चीज़ का अनुवाद करने से ख़ौफ़ महसूस करता हूँ ख़ासतौर पर इसलिए कि बाइबल और क़ुरआन के मध्य सख़्त इख़्तेलाफ़ है। बहरहाल उन्होंने अनुवाद कर दिया। कहते हैं चंद माह बाद मैंने उनसे मार्शली ज़बान सीखना शुरू कर दी। वह ज़बान सिखाने के लिए मस्जिद आते रहे। इस दौरान कई बार इस्लाम के बारे में बात होती। आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम की तालीमात से परिचित करवाता जिस पर मौसूफ़ इस्लाम की तालीमात से बहुत अच्छी तरह वाक़िफ़ हो गए। अभी ज़्यादा अरसा नहीं गुज़रा था कि मैंने मार्शल आईलैंड के मुबल्लिग़ को यह पैग़ाम भेजा कि हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम की किताब "हमारी तालीम" का मार्शली ज़बान में अनुवाद करो। क्योंकि नए अहमदियों के लिए तर्बीयत की बहुत ज़्यादा ज़रूरत होती है, तो कहते हैं मैं ने फिर लाजर साहिब से इस बारे में बात की और उन्होंने मदद करने पर रजामंदी ज़ाहिर की। अब कहते हैं कि उनका इस्लाम के बारे में विचार बिल्कुल बदल चुका था। इस बार उन्होंने अपनी नौकरी की परेशानी के बारे में वर्णन किया। फिर मैंने कहा कि दुआ करें मगर ईसा अलैहिस्सलाम के नाम के साथ नहीं। अल्लाह तआला के हुज़ूर दुआ करें। इसलिए वह दुआ करते रहे और चंद हफ़्ते बाद मिनिस्ट्री आफ़ कल्चर ने उनको एक नई डिपार्टमैंट खोल के उनके फ़ील्ड में नौकरी दे दी। जहां उन्होंने अप्लाई किया था वहां उनको फ़ौरन नौकरी मिल गई। उन्हों ने बताया कि अब जब मैं दुआ करता हूँ तो अपने आपको हज़रत-ए-ईसा अलैहिस्सलाम का नाम लेने से रोकता हूँ और इस के बजाय ख़ुदा तआला से दुआ करता हूँ। कुछ अरसा के बाद उनको मुलाज़मत की मंज़ूरी भी आगई। क़बूलियत दुआ का यह निशान देखकर हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम के अलफ़ाज़ पढ़ कर लाजर साहिब ने बैअत करली और हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम की किताब "हमारी तालीम" का मार्शली में अनुवाद भी तकमील तक पहुंच गया।

किस तरह अल्लाह तआला लोगों के दिल इस्लाम और हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम की तरफ़ फेर रहा है। कहाँ तो ईसाइयत दुनिया में अपने झंडे गाड़ने की बातें करती थी और कहाँ अब ईसाई हज़रत मुहम्मद रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के झंडे के नीचे आ रहे हैं। ये सब देखकर भी इन तथा-कथित मज़हब के ठेकेदारों की आँखें नहीं खुलतीं तो फिर उनका मुआमला ख़ुदा तआला के पास है।

हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम के ज़रीया अल्लाह तआला इस्लाम के पैग़ाम को दुनिया के कोने कोने तक पहुंचाने के लिए जमाअत अहमदिया के ज़रीया जो काम करवा रहा है उसने तो इन शा अल्लाह तआला फैलना और फलना और फूलना है। कोई नहीं जो इस ख़ुदाई काम को रोक सके लेकिन हर अहमदी को इस बात को भी समझना चाहिए कि केवल हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम के दावे को मान लेना ही काफ़ी नहीं है बल्कि हमें अपने अंदर वह पाक तबदीलियां पैदा करनी होंगी जो अल्लाह तआला की भेजी हुई तालीम का हक़ीक़ी उदाहरण हो जो आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम की सुन्नत पर चलने की अमली तस्वीर हो। और जब यह होगा तो तब ही हम अल्लाह तआला के फ़ज़्लों के वारिस भी बनेंगे। अल्लाह तआला हमें इसकी तौफ़ीक़ भी अता फ़रमाए।

फिलिस्तीनियों के लिए भी दुआएं करते रहेंअल्लाह तआला उन्हें इस ज़ुलम से निजात दे जो उन पर हो रहा है। कहते हैं कि अब चंद दिन के लिए जंग बंदी है ताकि ज़रूरियात-ए-ज़िंदगी की मदद पहुंच सके लेकिन इस के बाद फिर क्या होगा। मदद पहुंचा के फिर उनको मारेंगे। इसराईल की हुकूमत के इरादे तो ख़तरनाक लगते हैं क्योंकि उनकी हुकूमत के एक विशेष मुशीर ने कल परसों एक ऐलान यह किया है कि यदि इस जंग बंदी के बाद फिर फ़ौरी जंग न शुरू की गई तो मैं हुकूमत से निकल जाऊँगा। तो इस किस्म की तो उनकी सोचें हैं।

बड़ी ताक़तें हमदर्दी की बज़ाहिर बातें तो करती हैं लेकिन इन्साफ़ करना नहीं चाहतें और इस मुआमले में संजीदा ही नहीं हैं। उनको यह इलम नहीं। समझते हैं कि वहीं तक महिदूद रहेगी लेकिन उनके जो अक़्लमंद हैं वे भी कहने लग गए हैं कि यह जंग केवल इन इलाक़ों में महिदूद नहीं रहेगी बल्कि बाहर भी फैलेगी और उनके मुल्कों तक भी पहुंच जाएगी।

मुस्लमान हुकूमतें यदि कुछ बोलना शुरू हुई हैं जिस तरह सुना है सऊदी बादशाह ने भी कहा है कि मुस्लमानों की एकता होनी चाहिए

तो एक आवाज़ बनाना पड़ेगी। इसके लिए एक ठोस कोशिश करनी पड़ेगी।

यदि यह एहसास पैदा हुआ है तो अल्लाह तआला उनको इस एहसास को अमली जामा पहनाने की भी तौफ़ीक़ अता फ़रमाए। बहरहाल दुआओं की तरफ़ बहुत तवज्जा दें।

नमाज़ के बाद में चंद जनाज़े ग़ायब पढ़ाऊंगा। पहला वर्णन है अब्दुस्सालाम आरिफ़ साहिब मुरब्बी सिलसिला का। चो्वन वर्ष की उम्र में पिछले दिनों ये वफ़ात पा गए थे। इन्ना लिल्लाहे व इन्ना ईलेही राजेऊन।अल्लाह तआला के फ़ज़्ल से मूसी थे। उनके ख़ानदान में अहमदियत उनके पड़नाना श्रीमान हाजी हसन ख़ान के द्वारा आई जिन्हों ने 1937 में ख़िलाफ़त-ए-सानिया के दौर में अहमदियत क़बूल की थी। उनकी पत्नी की भी वफ़ात हो गई थी। अल्लाह तआला ने उनको दो बेटों से नवाज़ा और दोनों हाफ़िज़-ए-क़ुरआन हैं। एक मुरब्बी सिलसिला हैं और दूसरे भी मेरा ख़्याल है वाकिफ-ए-ज़िंदगी हैं।

उनके बेटे हाफ़िज़ अब्दुल मुनीम जो मुरब्बी सिलसिला हैं कहते हैं बहुत प्यार करने वाले थे। प्यार से तर्बीयत की। न केवल अपनी औलाद से प्यार किया बल्कि बिरादरी से भी सिलारहमी और मुहब्बत का बहुत ताल्लुक़ था। लोगों से भी बहुत प्यार का ताल्लुक़ था। यही वजह है कि बहुत से लोग उनकी वफ़ात पर आए और अपने ताल्लुक़ात का वर्णन किया। कहते हैं हमारे दिलों में अल्लाह और उसके रसूलुल्लाह हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम और ख़िलाफ़त की मुहब्बत इस क़दर रासिख़ की कि अब हमारे दिलों से कभी यह निकल नहीं सकती बल्कि हमें यह भी कहा कि अपनी औलाद को भी तलक़ीन करते चले जाना। कहते हैं माता की वफ़ात हुई तो ख़ुद भी बड़ा सब्र किया और हमें भी सब्र की तलक़ीन की।

उनके एक मुरब्बी दोस्त राजा मुबारक साहिब हैं कहते हैं में उनका क्लास फ़ैलो था और अक्सर वक़्त उनके साथ जामिआ में भी और फ़ील्ड में भी गुज़ारा और एक फ़िरिश्तासिफ़त इन्सान थे। इबादत में भी आला मुक़ाम, बुज़ुर्गी में भी आला मुक़ाम रखते थे। मैंने उनसे बहुत कुछ सीखा। निहायत मुहज़्ज़ब ज़बान इस्तिमाल करते। दलील से बात करते, कभी किसी से न लड़ते। लोग उनसे लड़ लेते, ज़्यादती भी कर लेते लेकिन वो हमेशा ख़ुद्दाम से मिलते। कभी ज़लील-ओ--रुस्वा करने की कोशिश नहीं की और हर किसी का पूरा-पूरा ख़्याल रखते थे और यही एक हक़ीक़ी मुरब्बी की ख़ुसूसीयत है। और कहते हैं जहां-जहां भी वह रहे सैंकड़ों अफ़राद के अंदर ख़िलाफ़त से मुहब्बत कूट कूट कर भरी। इतनी गहराई में जा कर उन्होंने तर्बीयत की है कि उनकी वफ़ात पर जहां-जहां भी वह रहे लोग आए और मुरब्बी साहिब का वर्णन कर के धाड़ें मार मार कर रोते थे कि हमारी जमाअत यतीम हो गई। ख़ुद कई-कई मील का पैदल सफ़र करते थे। पाँच दस किलो मीटर का सफ़र पैदल कर लेते थे और जब उनको कहा जाता था कि जमाअत सहूलत देती है किराया रिक्शा इत्यादि ले लिया करें तो कहते यदि मैं जमाअत के पैसे बचाता हूँ तो तुम लोगों को क्या तकलीफ़ है। और पैदल दौरे किया करते थे, मीलों मील दौरे करते थे। अल्लाह तआला उनके दर्जात बुलंद फ़रमाए और ऐसे बावफ़ा और मेहनती मुरब्बी अल्लाह तआला जमाअत को हमेशा देता रहे और बच्चों को भी उनकी नेकियां जारी रखने की तौफ़ीक़ दे।

दूसरा ज़िक्र मुहम्मद क़ासिम ख़ान साहब का है जो आजकल कैनेडा में थे। साबिक़ नायब नाज़िर बैतुल माल ख़र्च थे। रिटायर्ड हुए थे। तिरासी साल की आयु में उनकी वफ़ात हुई है। इन्ना लिल्लाहे व इन्ना ईलेही राजेऊन। नज़र अहमद ख़ान साहब के बेटे और क़ाज़ी मुहम्मद नज़ीर लायलपूरी साहिब के दामाद थे। उनके बेटे मुहम्मद ख़ालिद ख़ान कहते हैं उनको ख़िलाफ़त के चार दौर देखने की तौफ़ीक़ मिली। ख़िलाफ़त-ए-साल्सा के पूरे दौर में प्राईवेट सैक्रेटरी के दफ़्तर में ख़िदमत की तौफ़ीक़ मिली। मुजाहिद फ़ोर्स में बतौर कप्तान देश और जमाअत की

ख़िदमत की तौफ़ीक़ मिली। जंग के दिनों में फुर्क़ान फ़ोर्स भी बनी थी वहां भी ये थे। पांचों वक्त नमाज़, तिलावत क़ुरआन-ए-क्रीम का इल्तिज़ाम बहुत ज़्यादा था। औलाद को भी इस की तलक़ीन करते। सादगी और ईमानदारी का आला नमूना थे। औलाद को भी ख़िलाफ़त से ताल्लुक़ रखने की ताकीद करते रहे। ख़िलाफ़त के लिए एक नंगी तलवार थे। अल्लाह तआला मग़फ़िरत और रहम का सुलूक फ़रमाए और उनकी औलाद को उनकी नेकियां जारी रखने की तौफ़ीक दे।

पिछले दिनों हमारे जमाअत के प्रसिद्ध शायर अब्दुल करीम क़ुदसी साहिब की वफ़ात हुई है। एक वर्णन उनका है। इन्ना लिल्लाहे व इन्ना ईलेही राजेऊन। मरहूम के ख़ानदान में अहमदियत उनके वालिद मियां अल्लाह दत्ता साहिब के ज़रीया आई थी जिन्हों ने 1934 ई. में हज़रत मुस्लेह मौऊद रज़ी अल्लाह तआला अन्हो के हाथ पर बैअत की थी। फिर अहमदी होने के बाद सारी ज़िंदगी वक़्फ़ की तरह गुज़ारी। हमेशा तब्लीग़ करते रहे। बहुत से ख़ानदान अहमदी किए और सारी उम्र वक़्फ़ की रूह के साथ जमाअत की ख़िदमत की उनकी पत्नी बुशरा क्रीम साहिबा हैं जिनका निकाह हज़रत ख़लीफ़तुल मसीह सालिस रहमहुल्लाह ने पढ़ाया था। और उनके चार बच्चे हैं एक बेटे अब्दुल कबीर क़मर साहिब मुरब्बी सिलसिला हैं आजकल उस्ताद जामिआ अहमदिया रब्वाह हैं। ख़ुद क़ुदसी साहिब भी जमाअत की ख़िदमत करते रहे। तीस साल तक जमाअत अहमदिया रचना टाउन ज़िला लाहौर के सैक्रेटरी माल रहे। इस के इलावा भी विभिन्न विभागों में काम किया। उनकी शायरी तो अच्छी थी। काफ़ी शेअर कहते थे। मजमूआ भी है। उनका मजमूआ कलाम छप चुका है। एक ग़ैरमामूली काम जो उनका है वह क़सीदा یٰ عَیۡنَ فَیۡضِ اللّٰہِ وَالۡعِرۡفَان का मंजूम उर्दू अनुवाद और पंजाबी अनुवाद है। इस के इलावा दुर्रे-समीन के तीन सौ तेराह अशआर का पंजाबी अनुवाद भी उन्होंने किया है।

कहते हैं कि एक ज़माने में उनको जुनून चढ़ा कि जमाअत से ज़रा आज़ाद होना चाहिए तो ख़ुद ही लिखते हैं कि 1968 में अपने गांव कर्तव् पंडोरी से लाहौर मुलाज़मत के लिए आया और यहां आया तो फिर सैकूलर सोचों को फलने फूलने का अवसर मिलने लगा। नमाज़ें पढ़ते थे। कभी मस्जिद में जाते, कभी नहीं क्योंकि मस्जिद दूर थी। जुमा कभी कहीं पढ़ लिया, कभी न पढ़ा। कहते हैं एक दफ़ा एक जुमा पर एक दोस्त के घर दावत थी। साथ वाली मस्जिद ग़ैर अहमदियों की थी। वहां जुमा पढ़ने चले गए। मौलवी का हाल जो उन्होंने सुनाया वह आज भी यही है। तो मौलवी-साहब ने आधा ख़ुत्बा शेज़ान के ख़िलाफ़ दिया। शेज़ान जो है अहमदियों की है। पीने वाली वस्तु है। अहमदी कारख़ानों में बनता है। बहरहाल कहते हैं बाक़ी बातों के इलावा यह भी कहा कि वे लोग इस में रब्वाह की मिट्टी भी मिलाते हैं अर्थात रब्वाह की जो मिट्टी है वह शेज़ान में मिलाते हैं इसलिए यह बिल्कुल नहीं पीना चाहिए। कहते हैं मैंने उसका ख़ुत्बा तो सुन लिया लेकिन नमाज़ पढ़े बग़ैर में भाग गया। दोस्त कहने लगा क्या हुआ मैं ने कहा तुमने मौलवी की बकवास नहीं सुनी। कहने लगा छोड़ो ये बातें तो करते रहते हैं। बहरहाल खाना खाया। खाने के बाद कहते हैं बाहर निकले तो एक दुकान पर देखा कि मौलवी-साहब खड़े शेज़ान पी रहे थे। कहते हैं मुझ से नहीं रहा गया। मैंने मौलवी-साहब से पूछा आप तो अभी शेज़ान के ख़िलाफ़ बड़ा कुछ बोल के आए हैं, अब ख़ुद पी रहे हैं? कहता है डाक्टर ने मुझे कहा है स्क्रीन वाला कोई मशरूब नहीं पीना। शेज़ान पीने की हिदायत की है। यह ख़ालिस होती है इसलिए मैं दवाई समझ के पीता हूँ। तो मैंने कहा वह रब्वाह की मिट्टी मिलाने वाली बात क्या हुई? तो क़हक़हे लगा के मौलवी-साहब कहते कि ऐसे तड़के न लगाऐं तो हमारी दुकानदारी कैसे चले? दुकानदारी का आरोप हम पर और चला अपनी दुकानदारी कर रहे हैं। बहरहाल उनके बहुत सारे ऐसे वाक़ियात हैं। ख़िलाफ़त से बे-इंतिहा उनका ताल्लुक़ था। फिर अपनी औलाद और अपनी नसल में भी इस ताल्लुक़ को मुंतक़िल करने की उन्होंने कोशिश की और जैसा कि मैंने कहा जमाअत के प्रसिद्ध शायर थे और इसी बात को बड़ा एज़ाज़ समझते थे। जमाअती मुशाविरों में पढ़ते भी थे और जमाअत के बारे में उनको बेशुमार नज़्में लिखने का भी अवसर मिला। अल्लाह तआला उनसे मग़फ़िरत और रहम का फ़रमाए।

अगला वर्णन है मियां रफ़ीक़ अहमद गोन्दल साहिब यह भी पिछले दिनों इकासी साल की उम्र में वफ़ात पा गए। इन्ना लिल्लाहे व इन्ना ईलेही राजेऊन। अल्लाह तआला के फ़ज़्ल से मूसी थे। उनके ख़ानदान में अहमदियत का नफ़ुज़ उनके दादा हज़रत मियां ख़ुदाबख़्श साहिब गोन्दल आफ़ कोट मोमिन के ज़रीया हुआ। अपने ख़ानदान में वह अकेले अहमदी थे। हज़रत मसीह मौऊद अलैहि-स्सलाम के ज़माने में जब ताऊन फैली है तो उनको भी ताऊन की गिलटियां निकल आएं। अब निशानात का वर्णन हो रहा है तो यहां उनका यह वाक़िया भी एक निशान है। वह उसका ईलाज करवाने भेरा जाया करते थे। भीरे में उन्होंने हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम की यह इबारत पढ़ी कि जो मेरी चारदिवारी में दाख़िल होगा वह बचाया जाएगा। वह वापस घर आए और बताया कि मैं कादियान जा रहा हूँ। जब कादियान पहुंचे तो वहां मस्जिद मुबारक में हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम तशरीफ़ फ़र्मा थे और कुछ लिख रहे थे। उन्होंने इरादा किया कि कुछ बात करें लेकिन हज़रत-ए-अक़दस अलैहिस्सलाम की व्यस्तता की वजह से बोल नहीं सके। बहरहाल जब हज़रत मसीह मौऊद अलै-हिस्सलाम फ़ारिग़ हुए तो उन्होंने हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम को अपना परिचय करवाया और बताया कि मैं आप की ताऊन से महफ़ूज़ रहने वाली बात कि जो इस घर की चारदीवारी में दाख़िल होगा वह ताऊन से महफ़ूज़ रहेगा सुनकर आप से मिलने आया हूँ। बहरहाल वहां बात हुई तो उन्होंने बैअत कर ली और बैअत के बाद उनकी गिलटियां भी ठीक हो गईं। इस बात को भी आप हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम की सदाक़त का एक निशान समझते थे और वर्णन किया करते थे। ख़ुद मियां रफ़ीक़ गोन्दल साहिब और उनके बेटे को एक दफ़ा विद्यार्थियों ने लाहौर में पकड़ लिया और ख़ूब मारा। जब लड़के उनके बेटे की पिटाई कर रहे थे। यह घर से बाहर निकले और उनको बचाने की कोशिश की तो ये ख़ुद भी ज़ख़मी हुए और उनका बाज़ू भी टूटा तो बहरहाल जमाअत की ख़ातिर उन्होंने मार भी खाई। यह मलिक उमर अली साहिब खोखर के दामाद थे और मलिक उमर अली साहिब की पहली पत्नी हज़रत मीर इसहाक़ रज़ियल्लाहु अन्हो की बेटी थीं तो उनकी पत्नी हज़रत मीर इसहाक़ रज़ियल्लाहु अन्हो की नवासी थीं। उनकी औलाद में एक बेटा और दो बेटियां हैं और एक बेटा बेटी अमरीका में हैं। एक बेटी उनकी रिफ़अत सुल्ताना डाक्टर मशहूद अहमद हैं जो रब्वाह फ़ज़्ल-ए-उम्र हस्पताल में काम कर रहे हैं उनकी पत्नी है।

आपकी पत्नी ने लिखा कि नमाज़ों और तहज्जुद के पाबंद थे। ग़रीबों का बहुत ख़्याल रखते थे। अल्लाह तआला उनसे मग़फ़िरत और रहम का सुलूक फ़रमाए और उनके बच्चों को भी उनकी नेकियां जारी रखने की तौफ़ीक़ दे।

आख़िरी वर्णन श्रीमती नसीमा लईक साहिबा अमरीका का है। यह श्रीमान सय्यद लईक अहमद साहिब शहीद मॉडल टाउन लाहौर की पत्नी थीं। उनकी भी पिछले दिनों में वफ़ात हुई है। इन्ना लिल्लाहे व इन्ना ईलेही राजेऊन। यह भागल-पुर हिन्दुसतान में पैदा हुई थीं। उनके वालिद अबुल् हसन साहिब अहमदी नहीं थे और उनकी माता अमतुल वरा साहिबा ने ख़ुद बैअत की और अहमदियत में शामिल हुईं। इस ज़माने में कम से कम यह था कि यदि औरतों ने बैअत की तो कुछ पति ऐसे शुरफ़ा, शरीफ़ लोग थे जो औरतों को, अपनी बीवियों को ज़ोर नहीं दिया करते थे कि क्यों अहमदी हुई। बहरहाल माता अहमदी हुईं और माता के पुख़्ता ईमान और ख़िलाफ़त से मज़बूत ताल्लुक़ की वजह से बेटियों की शादियां भी उन्होंने अहमदी घरानों में कीं। ये सब बहनें अहमदी हैं।

उनकी बेटी हुमैरा साहिबा अमरीका में रहती हैं। कहती हैं जमाअत और ख़िलाफ़त के साथ कामिल तौर पर वाबस्ता रहीं। अपनी ज़िंदगी दीनी ख़िदमत के लिए वक़्फ़ कर रखी थी और जमाअत के सच्चे जज़्बा मुहब्बत और इन्सानियत की अक्क़ासी की। उनका दिल हमदर्दी से लबरेज़ था, खासतौर पर नादार लोगों के लिए और अपने इर्द-गिर्द मौजूद लोगों की ज़िंदगीयों पर मुसबत असर डालने के लिए अनथक मेहनत करने वाली थीं।

नुज़हत साहिबा उनकी एक बेटी हैं। यह यहां वॉलसॉल यू.के में रहती हैं। कहती हैं इंतेहाई मुख़लिस, ख़िलाफ़त की वफ़ादार, निज़ाम जमाअत की पाबंद थीं। इंतेहाई निडर महिला जो हक़ बात कहने वाली और कभी इस से पीछे नहीं हटती थीं। बद रसूमात और बिदआत को सख़्त नापसंद करती थीं और अपने बच्चों को भी इस हवाले से हमेशा तलक़ीन करती थीं कि एक अहमदी मुस्लमान को हर तरह की बुरी चीज़ों से परहेज़ करना चाहिए। ख़ुदा तआला के फ़ज़्ल से मूसिया थीं। पीछे रहने वालों में चार बेटे और चार बेटियां हैं। उनके एक बेटे अमरीका में डाक्टर हैं वह हमारे दौरों के दौरान साथ भी रहते हैं। बड़े ख़िदमत करने वाले हैं। अल्लाह तआला मरहूमा से मग़फ़िरत और रहम का सुलूक फ़रमाए और उनके बच्चों को उनकी नेकियां जारी रखने की तौफ़ीक़ दे।

★ ★ ★

ख़ुत्बः जुमअः

युद्ध के समय पर समस्त संसार के सरदार हज़रत मुहम्मद मुस्तफ़ा सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम का पवित्र आचरण

आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की किसी से ज़ाती दुश्मनी नहीं थी। अर्थात आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के दिल में उनके लिए किसी ज़ाती दुश्मनी के जज़बात नहीं थे बल्कि अल्लाह तआला के दीन को मिटाने वालों के ख़िलाफ़ जंग थी। जो अल्लाह तआला के दीन को मिटाना चाहते थे उनके विरुद्ध जंग थी

आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने जंग के सिद्धांत और नियम निर्धारित फ़रमाए। समझौतों का भी सम्मान किया और उन चीज़ों पर इंतेहाई दर्जा तक अमल भी किया। आजकल की दुनिया की तरह नहीं कि नियम और कानून तो बेशुमार बनाए हैं लेकिन अमल कोई नहीं बल्कि दोहरे मियार हैं

आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की ज़िंदगी तो क़ुरआन-ए-करीम के आदेश की अमली तफ़सीर थी जहां अदल-ओ-इन्साफ़ और अमन का क़ियाम बुनियादी उसूल वर्णन किए गए हैं

आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम का उस्वा इस तालीम की रोशनी में हर पहलू पर हावी और इसके आला मयार क़ायम करने वाला था

ग़ज़व-ए-अहद के अस्बाब और पृष्ठभूमि का तफ़सीली वर्णन

वाक़ियात साबित करते हैं यह जंग भी दुश्मन ने अपनी दुश्मनी की आग की वजह से शुरू की थी और मजबूरन मुस्लमानों को भी जंग के लिए निकलना पड़ा

फिलिस्तीन के उत्पीड़ित लोगों के लिए दुआ की पुनः तहरीक

फिलिस्तीनियों के लिए दुआएं करते रहें। जंग बंदी ख़त्म होने के बाद फिर उन पर बिना मतभेद के बमबारी होगी और फिर मासूम शहीद होंगे। कितना ज़ुलम होगा? अल्लाह बेहतर जानता है। उनके मुस्तक़बिल के बारे में बड़ी ताक़तों के इरादे जो हैं वे बड़े ख़तरनाक हैं। इसलिए उनके लिए बहुत दुआओं की ज़रूरत है। अल्लाह रहम फ़रमाई।

ख़ुत्बः जुमअः सय्यदना अमीरुल मो'मिनीन हज़रत मिर्ज़ा मसरूर अहमद ख़लीफ़तुल मसीह पंचम अय्यदहुल्लाहो तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़, दिनांक 1 दिसम्बर 2023 ई. स्थान - मस्जिद मुबारक इस्लामाबाद सिर्रे (यू.के)

أَشْهَدُ أَنْ لَّا إِلٰهَ إِلَّا اللّٰهُ وَحْدَهٗ لَا شَرِيكَ لَهٗ وَأَشْهَدُ أَنَّ مُحَمَّدًا عَبْدُهٗ وَ رَسُوْلُهٗ۔

أَمَّا بَعْدُ فَأَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنَ الشَّيْطٰنِ الرَّجِيْمِ۔ بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ۔ اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعَالَمِيْنَ۔ اَلرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ۔ مٰلِكِ يَوْمِ الدِّيْنِ ۔اِيَّاكَ نَعْبُدُ وَ اِيَّاكَ نَسْتَعِيْنُ۔ اِهْدِنَا الصِّرَاطَ الْمُسْتَقِيْمَ۔صِرَاطَ الَّذِيْنَ اَنْعَمْتَ عَلَيْهِمْ ۔ غَيْرِ الْمَغْضُوْبِ عَلَيْهِمْ وَلَا الضَّآلِّيْنَ

आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के ग़ज़वात के हवाले से कुछ वर्णन करूँगा। आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की शख़्सियत के पहलू और आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम का उस्वा इन हालात में किस तरह हमारे सामने आता है

जंग-ए-बदर के हवाले से हम देख चुके हैं कि किस तरह आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने क़ैदियों को सहूलतें मुहय्या फ़रमाईं। क़ैदी ख़ुद कहते हैं कि आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की हिदायत के अनुसार कि क़ैदियों से बेहतर सुलूक करो सहाबा रज़ियल्लाहु अन्हो अपनी ख़ुराक से बेहतर ख़ुराक हमें दिया करते थे। फिर हमने यह भी देखा कि जब इन क़ैदियों की रिहाई का मुआमला आया तो बड़ी आसान शरायत पर उनको रिहा कर दिया। कुछ का फ़िद्या तो केवल इतना था कि जिनको लिखना पढ़ना आता है वह मुस्लमानों को लिखना पढ़ना सिखा दें।

यह सब इसलिए था कि आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की किसी से ज़ाती दुश्मनी नहीं थी। अर्थात आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम के दिल में उनके लिए किसी ज़ाती दुश्मनी के जज़बात नहीं थे बल्कि अल्लाह तआला के दीन को मिटाने वालों के ख़िलाफ़ जंग थी। जो अल्लाह तआला के दीन को मिटाना चाहते थे उनके ख़िलाफ़ थी।

कुछ लोग दुश्मन की तरफ़ से अपनी मजबूरियों की वजह से शामिल होते थे। ऐसी भी कई मिसालें हैं। नहीं चाहते थे कि वह मुस्लमानों से लड़ें लेकिन मजबूरी थी। उनको आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने बहुत सी सहूलतें मुहय्या फ़रमाई। बाद में उनमें से बहुत से मुस्लमान भी हो गए।

फिर आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने जंग के सिद्धांत और नियम निर्धारित फ़रमाए। समझौतों का भी पास किया और उन चीज़ों पर इंतेहाई दर्जा तक अमल भी किया। आजकल की दुनिया की तरह नहीं कि नियम और कानून तो बेशुमार बनाए हैं लेकिन अमल कोई नहीं बल्कि दोहरे मयार हैं। आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की ज़िंदगी तो क़ुरआन-ए-करीम के आदेश की अमली तफ़सीर थी जहां अदल-ओ--इन्साफ़ और अमन का क़ियाम बुनियादी उसूल वर्णन किए हैं।

जैसा कि अल्लाह तआला एक जगह फ़रमाता है कि

يٰۤاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا كُوْنُوْا قَوّٰمِيْنَ لِلّٰهِ شُهَدَآءَ بِالْقِسْطِ وَلَا يَجْرِمَنَّكُمْ شَنَاٰنُ قَوْمٍ عَلٰۤى اَلَّا تَعْدِلُوْا اِعْدِلُوْا هُوَ اَقْرَبُ لِلتَّقْوٰى وَاتَّقُوا اللّٰهَ اِنَّ اللّٰهَ خَبِيْرٌۢ بِمَا تَعْمَلُوْنَ

(अल् मायदा : 9) हे वे लोगो जो ईमान लाए हो अल्लाह की ख़ातिर मज़बूती से निगरानी करते हुए इन्साफ़ की सहायता में गवाह बन जाओ और किसी क़ौम की दुश्मनी तुम्हें हरगिज़ इस बात पर आमादा न करे कि तुम इन्साफ़ न करो। इन्साफ़ करो यह तक़्वा के सबसे ज़्यादा क़रीब है और अल्लाह से डरो। यक़ीनन अल्लाह उससे हमेशा बाख़बर रहता है जो तुम करते हो।

अतः आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम का उस्वा इस तालीम की रोशनी में हर पहलू पर हावी और इसके आला मयार क़ायम करने वाला था।

जैसा कि मैंने कहा कि आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के ग़ज़वात में आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम का तरीक़ और उस्वा क्या था। इस बारे में जंग-ए-बदर के इलावा बाक़ी ग़ज़वात के बारे में भी वर्णन करूँगा। उनमें सरयात भी आ जाते हैं अर्थात वे जंगें जो आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने अपनी ज़िंदगी में दूसरों की सरकर्दगी में और दूसरों को सिपहसालार बना कर रवाना फ़रमाएं। बहरहाल यह लंबी तारीख़ है इसलिए इस में भी शायद चंद दिन लगें। आज उहद के हवाले से कुछ वर्णन करूँगा जैसा कि वाक़ियात साबित करते हैं ये जंग भी दुश्मन ने अपनी दुश्मनी की आग की वजह से शुरू की थी और मजबूरन मुस्लमानों को भी जंग के लिए निकलना पड़ा इस की तफ़सील में लिखा है कि यह ग़ज़वा मार्क-ए-बदर के एक वर्ष बाद शवाल 3 हिज्री में बरोज़ हफ़्ता पेश आया। इतिहासकारों और सीरत निगारों का इस बात पर इत्तिफ़ाक़ है कि ग़ज़वा शवाल 3 हिज्री में पेश आया जबकि एक कथन यह भी है और यह शाज़ क़ौल है कि यह ग़ज़वा 4 हिज्री में पेश आया। शवाल की तारीख़ के बारे में विभिन्न अक़्वाल हैं। ज़्यादा-तर 7 और 15 शवाल का वर्णन किया जाता है। इब्ने इसहाक़, इब्ने हशाम, इब्ने हज़म, इब्ने ख्यात और तिबरी इत्यादि ने केवल 15 शवाल का क़ौल नक़ल किया है।

आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम मदीना मुनव्वरा से जुमा के रोज़ बाद नमा-ज़-ए-अस्र रवाना हुए और बरोज़ हफ़्ता सूरज बुलंद होने से क़बल मैदान-ए-अहद पहुंचे। उहद मदीना के पहाड़ों में से एक पहाड़ का नाम है। यह मदीना से तक़रीबन तीन मील के फ़ासले पर है।

(दायरा मआरिफ़ सीरत मुहम्मद रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम भाग 6 पृष्ठ 456 नाशिर बज़म-ए-इक़बाल लाहौर2022 ई.)

(सीरत हल्बिया अनुवाद भाग 2 अंतिम पृष्ठ 132 प्रकाशन दारुल इशात कराची)

जबल उहद मौजूदा मस्जिद नबी सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम से तक़रीबन चार किलो मीटर शुमाल की सिम्त है। आजकल मदीना मुनव्वरा की आबादी कहते हैं इस पहाड़ी के दामन तक पहुंच चुकी है बल्कि उसके इर्द-गिर्द भी फैली हुई है। उहद पहाड़ हर्म में दाख़िल है। उहद पूरब पश्चिम में फैला हुआ है जिसकी लंबाई छः किलोमीटर बनती है और इस पहाड़ी का रंग लाल है।

(एटलस सीरतुन्नबी पृष्ठ 245 प्रकाशन दारुस सलाम रियाज़)

(उद्धृत उर्दू दायरा मआरिफ़ भाग 2 पृष्ठ 31पंजाब यूनीवर्सिटी लाहौर)

सीरत ख़ातम नबिय्यीन सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम में ग़ज़व-ए-अहद की तारीख़ हज़रत मिर्ज़ा बशीर अहमद रज़ियल्लाहु अन्हो ने पंद्रह शवाल तीन हिज्री 31 मार्च 624 ईसवी बरोज़ हफ़्ता वर्णन की है।

(उद्धृत सीरत ख़ातमन नबिय्यीन सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम से हज़रत मिर्ज़ा बशीरुद्दीन महमूद अहमद साहब एम.ए रज़ियल्लाहु अन्हु पृष्ठ 487)

इस की मज़ीद तफ़सील इस तरह है। इस ग़ज़वा का कारण यह हुआ कि जब ग़ज़वा बदर में क़ुरैश को एक इबरतनाक शिकस्त हुई तो क़ुरैश के सरकरदा लोगों में से जैसे अब्दुल्लाह बिन अबी रबीया, अकरम बिन अबू जहल और सफ़वान बिन उमय्या, अस्वद बिन मुत्तलिब, जुबैर बिन मुतहम, हारिस बिन हशशाम, होवैतब बिन अब्दुल उज़ा और क़ुरैश के कुछ दूसरे सरकरदा अबू सुफ़ियान के पास आए जिनका इस तिजारती क़ाफ़िले में माल था जो जंग-ए-बदर का कारण बना था। यह तिजारती माल मक्का में ला कर हसब-ए-दसतूर दारुल नदवा में रख दिया गया और उनके माल को इन तक नहीं पहुंचाया गया क्योंकि जब यह माल अबू सुफ़ियान लेकर आया तो मक्का के लोग जंग बदर के लिए गए हुए थे। जंग बदर के कुछ अरसा बाद उन लोगों ने आकर अबू सुफ़ियान से कहा कि मुहम्मद (सल्लल्लाहो व सल्लम) ने हमारे बेशुमार आदमियों को क़तल कर दिया है। इसलिए इस माल तिजारत से मुहम्मद सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के साथ लड़ने के लिए जंग की तैयारी करें। मुम्किन है हम अपने मक़्तूलों का बदला लेने में सफ़ल हो सकें। फिर उन लोगों ने मज़ीद कहा हम ख़ुशी से इस बात पर तैयार हैं कि इस माल तिजारत के नफ़ा से मुहम्मद सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के साथ मुक़ाबला करने के लिए एक लश्कर तैयार किया जाए।

यह सुन कर अबू सुफ़ियान ने कहा कि मैं इस तजवीज़ को मंज़ूर करता हूँ और बनू अब्दुल मुनाफ़ मेरे साथ हैं। इस के बाद क़ुरैश ने माल में से नफ़ा अलग करके जिसकी मालियत पच्चास हज़ार दीनार थी असल माल मालिकों को दे दिया और एक कथन यह है कि जो नफ़ा अलैहदा किया गया वह पच्चीस हज़ार दीनार था।

(सीरत हल्बिया अनुवाद भाग 2 अंतिम पृष्ठ 133-134 प्रकाशन दारुल इशात कराची)

(इन्साईकलोपीडिया भाग 6 पृष्ठ 145 प्रकाशन दारुस्सलाम रियाज़)

बहरहाल जो नफ़ा था वह इस जंग के लिए दे दिया गया। इस बारे में अल्लाह तआला ने यह आयत नाज़िल की कि إِنَّ الَّذِينَ كَفَرُوا يُنفِقُونَ أَمْوَالَهُمْ لِيَصُدُّوا عَن سَبِيلِ اللَّهِ فَسَيُنفِقُونَهَا ثُمَّ تَكُونُ عَلَيْهِمْ حَسْرَةً ثُمَّ يُغْلَبُونَ وَالَّذِينَ كَفَرُوا إِلَىٰ جَهَنَّمَ يُحْشَرُونَ (अल् अन् फ़ाल : 37) यक़ीनन वे लोग जिन्हों ने इंकार किया अपने माल ख़र्च करते हैं ताकि अल्लाह की राह से रोकें। अतः वह उनको इसी तरह ख़र्च करते रहेंगे। वह माल उन पर हसरत बन जाऐंगे फिर वे मग़लूब कर दिए जाऐंगे और वे लोग जिन्हों ने कुफ़्र किया जहन्नुम की तरफ़ इकट्ठे कर के ले जाए जाऐंगे।

(सबलुल् हुदा वल् रिशाद भाग 4 पृष्ठ 182 दारुल कुतुब इल्मिया बेरूत)

इस एक अहम सबब के इलावा कुछ और उमूर भी थे जो कि इस जंग के अस्बाब क़रार दिए जा सकते हैं।

जैसा कि पिछले ख़ुत्बा में भी वर्णन हो चुका है कि ग़ज़व-ए-बदर के बाद अहल मक्का का शाम जाना मुहाल हो चुका था क्योंकि मक्का और शाम की तिजारत का रस्ता मदीना के मुज़ाफ़ात से गुज़रता था जिसे मुस्लमानों की तरफ़ से बंद कर दिया गया था और कुफ़्फ़ार के साबिक़ा ज़ुलम-ओ-सितम के बायस उनका वहां से क़ाफ़िलों समेत गुज़रना दुशवार होता जा रहा था जिसकी वजह से क़ुरैश को अपनी मआशी मौत नज़र रही थे और तिजारती रास्ते की बंदिश ग़ज़वात और सराया में शिकस्त और बदर में क़ुरैश के सरदारों का क़तल और सत्तर मुशरेकीन की गिरफ़्तारी जैसे उमूर उनकी शौहरत और मुआशरती हालत पर बदनुमा दाग़ थे जिन्हें धोने के लिए और अपनी मुआशरती साख बहाल रखने के लिए वे इंतिक़ाम लेना चाहते थे ताकि क़ुरैश मक्का की गिरती हुई सयासी और मज़हबी साख को बहाल किया जा सके।

(उद्धृत दायरा मआरिफ़ सीरत मुहम्मद रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम भाग 6 पृष्ठ 434 नाशिर बज़म इक़बाल लाहौर 2022 ई.)

दूसरी तरफ़ जंग बदर के बाद क़ुरैश मक्का को दो मज़ीद शर्मनाक ज़िल्लतों का सामना करना पड़ा जिनकी वजह से अबू सुफ़ियान समेत मक्का वालों का ग़ैज़-ओ--ग़ज़ब और बढ़ गया और उन्होंने मुस्लमानों से इंतेक़ाम लेने के लिए एक बाक़ायदा मुसल्लह जंग करने का पुख़्ता अज़म किया।

इसलिए एक मुसन्निफ़ ने ग़ज़वा उहद का एक कारण यह वर्णन किया है कि क़ुरैश को कुछ मुहिम्मात में नाकामी हुई और इस की वजह से उनमें रंज-ओ-ग़म और इंतेक़ाम का जज़बा बहुत ज़्यादा हो गया। इसलिए वह लिखता है कि अबूसुफ़ियान जो बदर के मैदान में उतरे बिना अपने तिजारती क़ाफ़िलों को महफ़ूज़ रास्तों से वापस मक्का लाया था उसे अहले मक्का के तानों का मुसलसल सामना करना पड़ा। उसने मु-स्लमानों से इंतेक़ाम लेने की क़सम खाई और क़ुरैश को बावर करवाया था कि वह मदीना जा कर मुस्लमानों से भरपूर जंग करेगा। अबूसुफ़ियान ने अपनी कस्म पूरी करने के लिए दो सौ अफ़राद का लश्कर भी तैयार कर लिया और मदीना पहुंच भी गया परंतु खुली जंग का हौसला न कर सका और मदीना के निकट में चंद दरख़्त गिरा कर, खेत जला कर और दो अफ़राद को क़तल कर के फ़रार हो गया।

इस जंग को जंग स्वैक कहा जाता है इस का वर्णन भी मैं पिछले ख़ुत्बात में कर चुका हूँ। अबू सुफ़ियान की कोशिश तो यह थी कि मक्का के लोग आइन्दा उसे यह ताना न दें कि मैदान बदर में तुम अपने क़बीले वालों को छोड़ कर वापस आ गए थे परंतु इस नाकाम मुहिम के बाद तो लोग अबूसुफ़ियान की इस बचगाना हरकत पर बाक़ायदा फ़िक़रे कसना शुरू हो गए थे। लिहाज़ा अबूसुफ़ियान अब अपनी अना की तसकीन की ख़ातिर भी मुस्लमानों के साथ एक बड़ी जंग के लिए भरपूर कोशिशें कर रहा था। जैसा कि ख़ुत्बात में में शिकसत के बारे में वर्णन हो चुका है। अबू सुफ़ियान की मदीना के ख़िलाफ़ नाकाम मुहिम के बाद क़ुरैश ने अपना एक बड़ा तिजारती क़ाफ़िला रास्ता बदल कर इराक़ की शाहराह से शाम को रवाना किया था जिसमें सोने के ज़ेवरात, चांदी के ज़रूफ़ और अन्य सामान तिजारत जिन की मालियत का अंदाज़ा तक़रीबन एक लाख दिरहम था। जब यह क़ाफ़िला क़रदा चशमा पर उतर रहा था तो हज़रत ज़ैद बिन हारिस रज़ियल्लाहु अन्हो ने मदीना की हदूद के अंदर क़ाफ़िला क़ुरैश को रोक लिया था। समस्त माल तिजारत क़ुरैश से छीन कर मदीना लेकर पहुंचे थे। जंग बदर में बदतरीन शिकस्त के बाद अहले क़ुरैश के लिए क़रदा का वाक़िया बहुत बड़ी हज़ीमत थी। अर्थात वह उस वक़्त मदीना के क़रीब ही था और उनकी आतिश इंतेक़ाम दो चंद हो गई थी। ग़ज़व-ए-अहद की वजूहात में से एक यह वाक़िया भी था।

(ग़ज़वात-ओ-सराया अज़ अल्लामा मुहम्मद अज़हर फ़रीद, पृष्ठ 156-157 प्र-काशन फ़रीदिया प्रिंटिंग प्रैस साहीवाल)

बहरहाल बहुत सी वजूहात थीं जिनकी वजह से कुफ़्फ़ार जंग की तैयारी करते रहे और इस के लिए क़ुरैश की तरफ़ से इर्द-गिर्द के क़बायल को भी शमूलियत की दावत दी गई।

जिसकी तफ़सील यूं मिलती है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम से फ़ैसलाकुन जंग के लिए जब सरमाया जमा हो गया तब अगले मरहले की तैयारी शुरू हुई। क़ुरैश तो बरसर-ए-पैकार थे ही परंतु उन्होंने आस पास के विभिन्न क़बायल को इस जंग में शामिल करने के लिए विभिन्न तरीक़े इख़्तेयार किए। किसी के पास इन्फ़-रादी तौर पर और किसी के हाँ वफ़द की सूरत में गए। किसी को लालच दिया तो किसी को मज़हबी और इलाक़ाई ग़ैरत-ओ-हमियत दिला कर साथ मिला लिया। इस काम के लिए अम्र बिन आस, हुबे बिन अबी वहब अब्दुल्लाह बिन ज़िबरा, मुसाफ़ह बिन अब्दुल मुनाफ़ अबू उज़मा अजमी इत्यादि को भेजा गया। यह अबू उज़मा अजमी वही था जिसे रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने बदर के क़ैदियों में से आज़ाद किया था। इस वक़्त उसने रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम से अर्ज़ किया था कि हे मुहम्मद! सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम मेरी पाँच बेटियां हैं जिनका मेरे सिवा कोई सहारा नहीं। मुझे माफ़ फ़र्मा दें। आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने न केवल माफ़ किया बल्कि उसे बग़ैर फ़िद्या के आज़ाद भी कर दिया। यह आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम का उस्वा था। इस वक़्त उसने अह्द-ओ-पैमान भी किया कि आइन्दा न मैं आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के ख़िलाफ़ लड़ूँगा और न आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के ख़िलाफ़ किसी की मदद करूँगा परंतु ग़ज़व-ए-अहद के अवसर पर सफ़वान बिन अमय की तरफ़ से इनाम-ओ-इकराम के लालच में उसने अपने इस अह्द को तौड़ दिया और अपने अशआर से अहल-ए-अरब को जोश-ए-इंतेक़ाम पर उभारने लगा। ये शारा जा कर क़बायल को उक्साते। माज़ी याद करवा कर उभारते और साथ मिलने की दावत देते। क़बायल किनाना हल् तहामा दूसरे क़बायल में से बेशुमार लोगों ने उनकी हाँ मैं हाँ मिलाई और रियासत मदीना पर शब-ख़ून मारने की हर तरफ़ से यक़ीन देहानी करवाई और यक़ीन देहानी ही नहीं करवाई बल्कि शमूली-

यत की।

(किताब अल्मग़ाज़ी भाग 1 पृष्ठ 110-111 बदर अल् किताल, आलेमुल कुतुब बेरूत 1984 ई.)

(उद्धृत दायरा मआरिफ़ सीरत मुहम्मद रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम भाग 6 पृष्ठ 436 नाशिर बज़्मे इक़्बाल लाहौर 2022 ई.)

कुफ़्फ़ार की इन तैयारियों की जो वे जंग के लिए कर रहे थे हज़रत अब्बास रज़ी अल्लाह तआला अन्ना की तरफ़ से आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम को सूचना हो गई।

जिसकी तफ़्सील इस तरह है कि आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम को क़ुरैश की इन जंगी तैयारियों और जोश-ओ-ख़ुरोश की इत्तिला आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के चचा हज़रत अब्बास रज़ियल्लाहु अन्हो ने भेजी जो मक्का में थे। हज़रत अब्बास रज़ियल्लाहु अन्हो ने आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम को यह इत्तिला एक ख़त के माध्यम से दी थी जो उन्होंने बनू गफ़्फ़ार के एक शख़्स के हाथ भेजा था। हज़रत अब्बास रज़ियल्लाहु अन्हो ने इस शख़्स को ख़त ले जाने के लिए उजरत पर तैयार किया था और इस से यह शर्त की थी कि वे तीन दिन रात नियमित सफ़र कर के मदीना पहुंचे और आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम को यह ख़त हवाले कर दे। इसलिए उसने दिन रात सफ़र किया और तीसरे दिन आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की ख़िदमत में पहुंच गया। आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम उस वक़्त क़ुबा में थे जब उस शख़्स ने यह ख़त आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम को पहुंचाया तो आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने उस की मोहर तोड़ी और इसके बाद उबै बिन काब को ख़त देकर सुनाने के लिए कहा। उबै बिन काब ने ख़त आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम को सुनाया। आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने उबै से उस ख़त और ख़बर को छिपाने के लिए फ़रमाया।

(उद्धृत सीरत हल्बिया भाग 2 पृष्ठ 296 दारुल कुतुब इल्मिया)

एक दूसरी जगह वर्णन है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ख़ुद साद बिन रबी के घर तशरीफ़ ले गए और उनको हज़रत अब्बास रज़ियल्लाहु अन्हो के ख़त के बारे में बताया और फ़रमाया मुझे भलाई की उम्मीद है तुम इस ख़बर को मख़्फ़ी रखना। जब रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम साद के घर तशरीफ़ लाए थे तो उनकी पत्नी उनके पास आएं और कहा आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने क्या फ़रमाया है? घर के अंदर से सुन रही थीं जो बातें हुईं। साद ने कहा तुम्हें इस से क्या? उसने कहा मैंने सारी बातें सुन ली हैं और जब उसने ये सब कुछ बता दिया तो साद ने कहा لا الله। फिर कहा मेरा ख़्याल न था कि तुम हमारी बातें सुन रही होगी। वह अपनी बीवी को रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के पास ले गए और इस का मुआमला आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम को सुनाया और निवेदन किया : हे रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम मुझे डर हुआ कि कहीं बात लोगों में फैल जाए और आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम समझें कि मैंने यह राज़ इफ़शा किया है हालाँकि आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने तो मुझे राज़ गुप्त रखने का फ़रमाया था। इस पर रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया। ठीक है जाने दो।

(सबलुल् हुदा वल् रिशाद भाग 4 पृष्ठ 182-183 दारुल कुतुब इल्मिया बेरूत लुबनान 1993 ई.)

अब इस औरत को चेतावनी भी कर दी होगी। एक तरफ़ तो आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने यह एहतियाती तदबीर इख़्तेयार की जबकि दूसरी तरफ़ यहूद मदीना और मुनाफ़क़ीन ने प्रसिद्ध कर दिया कि मुहम्मद सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम को कोई अच्छी ख़बर मौसूल नहीं हुई। इस तरह उन मुनाफ़ेक़ीन और दुश्मनों को ख़ुबस-ए-बातिन के इज़हार और तान-ओ-तशनीअ का एक और अवसर मिल गया। उन्होंने इस ख़बर में रंग आमेज़ी करके उसे ख़ूब फैलाया और इस्लाम के मानने वालों को अपनी तरफ़ से ख़ौफ़ज़दा करने की भरपूर कोशिश की। इसी तरह यह ख़बर मदीना के अतराफ़-ओ-अकनाफ़ में फैल गई और हर एक चौकन्ना हो गया। हर तरफ़ यही शोर-ओ-ग़ौग़ा था कि मुशरेकीन-ए- मक्का फिर जंग के लिए आ रहे हैं।

(दायरा मआरिफ़ सीरत मुहम्मद रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम भाग 6 पृष्ठ 443 नाशिर बज़्म इक़्बाल लाहौर 2022 ई.)

अल्लामा इब्ने अब्दुल बरा का वर्णन है कि हज़रत अब्बास रज़ियल्लाहु अन्हो मुशरिकों की ख़बरें लिख कर आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की तरफ़ इरसाल कर रहे थे। मक्की मुस्लमान अब्बास रज़ियल्लाहु अन्हो को अपना सहारा ख़्याल करते थे जबकि अब्बास रज़ियल्लाहु अन्हो चाहते थे कि मैं मदीना में आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के पास चला जाऊं लेकिन आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने उन्हें लिखा कि आप रज़ियल्लाहु अन्हो का मक्का में रहना ज़्यादा बेहतर है। हज़रत अब्बास रज़ियल्लाहु अन्हो की प्रदान की गई ख़बरें बड़ी तफ़्सीली होती थीं। एक ख़त में वे लिखते हैं कि क़ुरैश का लश्कर आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की तरफ़ रवाना हो चुका है उनके पहुंचने तक उनसे मुक़ाबले की जहां तक संभव हो तैयारी कर ली जाए। ये कुल तीन हज़ार का लश्कर है जिसके आगे दो सौ घुड़सवार हैं उनमें सात सौ ज़िरह पोश हैं और तीन हज़ार ऊंट हैं और वे अपना तमाम-तर असलाह साथ ला रहे हैं।

(अल् सीरतुल नबविया अज़ अली मुहम्मद सलाबी,अनुवादक भाग 2 पृष्ठ 561 प्रकाशन दारुस्सलाम)

हज़रत मिर्ज़ा बशीर अहमद रज़ियल्लाहु अन्हो ने सीरत ख़ातिम नबिय्यीन सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम में हज़रत अब्बास रज़ियल्लाहु अन्हो की इत्तिला का वर्णन करते हुए इस तरह लिखा है कि :

"जिस तिजारती क़ाफ़िला का वर्णन जंग-ए-बदर के हालात में गुज़र चुका है इस के मुनाफ़ा का रुपया जिसकी मालियत पच्चास हज़ार दीनार थी मक्का के सरदारों के फ़ैसला के अनुसार अभी तक दारुल नदवा में मुस्लमानों के ख़िलाफ़ हमला करने की तैयारी के वास्ते महफ़ूज़ पड़ा था। अब इस रुपय को निकाला गया और बड़े ज़ोर शोर से जंग की तैयारी शुरू हुई। मुस्लमानों को इस तैयारी का इल्म भी नहीं होता और लश्कर कुफ़्फ़ार मुस्लमानों के दरवाज़ों पर पहुंच जाता परंतु आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की दूरदर्शिता ने समस्त ज़रूरी एहतियातें इख़्तेयार कर रखी थीं अर्थात आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने अपने चचा अब्बास बिन अब्दुल मुत्तलिब रज़ियल्लाहु अन्हो को जो दिल में आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के साथ थे मक्का में ठहरे रहने की ताकीद कर रखी थी और वह क़ुरैश की हरकात व सकनात से आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम को इत्तिला देते रहते थे। इसलिए अब्बास बिन अब्दुल मुत्तलिब रज़ियल्लाहु अन्हो ने इस अवसर पर भी क़बीला बनू ग़फ़ार के एक तेज़-रौ सवार को बड़े इनाम का वादा देकर मदीना की तरफ़ रवाना किया और एक ख़त के ज़रीया आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम को क़ुरैश के इस इरादे से इत्तिला दी और इस क़ासिद को सख़्त ताकीद की कि तीन दिन के अंदर अंदर आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम को यह ख़त पहुंचा दे। जब यह क़ासिद मदीना पहुंचा तो इत्तिफ़ाक़ से उस वक़्त आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम मदीना के हवाली क़ुबा अर्थात क़रीब की जगह में तशरीफ़ ले गए हुए थे। इसलिए यह क़ासिद आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के पीछे वहीं क़ुबा में पहुंचा और आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के सामने यह बंद ख़त पेश कर दिया। आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फ़ौरन अपने कातिब-ए-ख़ास उबै बिन काब अंसारी रज़ियल्लाहु अन्हो को ख़त दिया और फ़रमाया कि उसे पढ़ कर सुनाओ कि क्या लिखा है। उबय बिन काब अंसारी रज़ियल्लाहु अन्हो ने ख़त पढ़ कर सुनाया तो इस में यह वहशत-नाक ख़बर दर्ज थी कि क़ुरैश का एक जर्रार लश्कर मक्का से आ रहा है। आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने ख़त सुनकर उबै बिन काब को आदेश फ़रमाई कि इस के मज़मून से किसी को इत्तिला न हो।"

(सीरत ख़ातमन नबिय्यीन सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम से हज़रत मिर्ज़ा बशीरुद्दीन महमूद अहमद साहब एम.ए रज़ियल्लाहु अन्हु पृष्ठ 482-483)

बहरहाल यह लश्कर रवाना हुआ और इस की तफ़सील में मज़ीद लिखा है कि क़ुरैश का लश्कर 5 शवाल को मक्का से निकला।

(सबलुल् हुदा वल् रिशाद भाग 4 पृष्ठ 183 दारुल कुतुब इल्मिया)

इस जंग में क़ुरैश की क़ियादत अबूसुफ़ियान के हाथ में थी। शाहसवारों का निगरान ख़ालिद बिन वलीद था और अलम बरदार बनू अब्दुलदार थे। तथा भाले उठाए हुए, ज़िरहें पहने, भाले थामे और तीर कमान साथ लिए अपने सीनों को जोश-ए-इंतेक़ाम से भर कर तीन हज़ार जंगजू अफ़राद आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम से जंग के लिए मक्का से मदीना की तरफ़ रवाना हुए

उनमें से दो हज़ार नौ सौ क़ुरैश और उनके मवाली और अन्य क़बायल में से थे जबकि सौ कनाना क़बायल में से थे। सात सौ ज़िरहें, दो सौ घोड़े और तीन हज़ार ऊंट हमराह लिए थे जैसा पहले वर्णन हो चुका है। रास्ते में खाने के लिए ज़बह किए जाने वाले ऊंट उसके इलावा थे। बजाने के लिए दफ़ और पीने के लिए ख़ास मिक़्दार में शराब भी साथ उठाई।

(दायरा मआरिफ़ सीरत मुहम्मद रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम भाग 6 पृष्ठ 441 नाशिर बज़्म-ए-इक़्बाल लाहौर 2022 ई.)

(ग़ज़वा उहद अज़ मुहम्मद अहमद बा समील पृष्ठ 75)

फिर एक सीरत की किताब में लिखा है कि क़ुरैश ने हज़रत अब्बास रज़ियल्लाहु अन्हो को अपने साथ इस जंग में ले जाने की कोशिश की परंतु अब्बास रज़ियल्लाहु अन्हो ने उज़्र कर दिया और क़ुरैश की इस लापरवाही का वर्णन किया जो जंग-ए-बदर के अवसर पर उनके साथ की गई थी कि वह गिरफ़्तार हुए थे किसी ने उनकी रिहाई में उनकी मदद नहीं की।

(सीरत हल्बिया भाग 2 पृष्ठ 296 दारुल कुतुब इल्मिया बेरूत)

बहुत सी औरतों ने भी जोश-ए-इंतेक़ाम में जंग में मर्दों के हमराह जाने के लिए इसरार किया।

इस पर एक शख़्स ने मजलिस मुशावरत में कहा कि हम सिरों पर कफ़न बांध कर

जा रहे हैं। अगर अपने मक़्तूलों का बदला न ले सके तो ज़िंदा वापस नहीं आएँगे। इसलिए औरतों का साथ हमारे लिए मुफ़ीद साबित होगा। यह हमारे जोश को उभारेंगी और हमें बदर के वाक़ियात याद दिला कर आगे बढ़ने का जज़बा पैदा करेंगी।

नौफ़ल बिन मुआविया ने कहा यह ख़वातीन हमारी इज़्ज़त-ओ-आबरू हैं अगर हमें शिकस्त हो गई तो उनकी बेहुरमती से हमारा वक़ार ख़ाक में मिल जाएगा। विभिन्न राएं सामने आईं। अबूसुफ़ियान की बीवी हिंद भी इस अवसर पर मौजूद थी। जब ये दोनों तरह की राएं मर्दों की तरफ़ से आगईं तो ये औरत बोली कि लोगो! इस बात से न घबराओ कि तुम ज़िंदा बच कर नहीं आ सकोगे। तुम लोग बदर से भी बहिफ़ाज़त वापस आ गए थे और तुमने अपनी ख़वातीन को भी देख लिया था। तुम हमें इस जंग में साथ जाने से मना नहीं कर सकते। यही ग़लती तुमने बदर में की थी जब तुम लोगों ने अपनी महिलाओं को वापस लौटा दिया था। अगर यह ख़वातीन मार्क-ए-बदर के वक़्त तुम्हारे साथ मौजूद होतीं तो तुम लोगों को ग़ैरत दिला कर आगे बढ़ाते। अफ़सोस! बदर के मैदान में हमारे प्यारे अज़ीज़ दुश्मनों के हाथों मारे गए।

(हयात मुहम्मद मुस्तफ़ा सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम अज़ मुहम्मद हुसैन हैकल पृष्ठ 379 मकतबा बुक कॉर्नर जेहलम)

बहरहाल क़ुरैश के सरदारों ने हिंद की बात से इत्तिफ़ाक़ किया और वे औरतों को लश्कर के साथ ले जाने पर राज़ी हो गए। फ़ौज के साथ जाने वाली औरतों की संख्या पंद्रह वर्णन की गई है (ग़ज़वा उहद अज़ मुहम्मद अहमद बाशमील पृष्ठ 76) जिन में अबूसुफ़ियान ने अपनी बीवी हिंद बिंत उत्बा को शामिल किया। इसी तरह अकरमा बिन अबू जहल ने अपनी बीवी उम्मे हकीम बिंत हारिस बिन हशशाम को साथ लिया। और हारिस बिन हशशाम ने अपनी बीवी फ़ातिमा बिंत वलीद को साथ लिया।और सफ़वान बिन अमय ने अपनी बीवी बरज़ह बिंत मसऊद को साथ लिया जो अब्दुल्लाह बिन सफ़वान की माँ थीं। इब्ने इसहाक़ ने कहा है कि अम्र बिन आस अपनी बीवी रेता बिंत मुनब्बे के साथ निकला और तल्हा बिन अबी तल्हा ने अपनी बीवी सुलाफ़ह बिंत साद को साथ लिया। यह तलहा के बेटों मुसाफ़े और जुलास और किलाब की माँ थी और ये सब उहद के दिन क़तल हुए थे। और ख़ुन्नास बिंत मालिक जो क़बीला बनू मालिक में से थी अपने बेटे अबी अज़ीज़ बिन अमीर के साथ हुई। यह हज़रत मसअब बिन अम्र रज़ियल्लाहु अन्हो की माँ थीं। और उम्र बिंत अल्कमा जो क़बीला बनू हारिस में से थी वह भी लश्कर के साथ हुई।

जंग के दौरान हिंद बिंत उत्बा जब वहशी के पास आती या वहशी उसके पास आता तो यह इस से कहती कि अबू दसमा, यह वहशी की कुनिय्यत है कि ऐसा काम करना जिससे हमारे दलों को आराम पहुंचे। यह हब्शी ग़ुलाम था। वहशी के पास एक नेज़ा था जो बहुत कम गलती करता था और जिसके लग जाता था उसको ज़िंदा नहीं छोड़ता था। वहशी जुबैर बिन मुतअम का ग़ुलाम था। उसने वहशी को बुला कर कहा कि तू भी लश्कर के साथ जा और अगर तू ने हम्ज़ा को शहीद कर दिया या मार दिया तो मैं तुझे आज़ाद कर दूँगा क्योंकि हम्ज़ा ने मेरे चचा तुएमा बिन अदी को क़तल किया है।

इस लश्कर ने मदीना के मुक़ाबिल पर उहद के मैदान में बतन सबख़ह में वादी कनात के किनारे पर वाक़्य जबल एनेन पर डेरा डाला। सबख़ह भी मदीना में जबल एनीन और जरूफ़ के पास की जगह है और जरूफ़ मदीना से तीन मील शुमाल की जानिब एक जगह है और एनीन उहद की एक पहाड़ी का नाम है। उहद के और इसके मध्य एक वादी है और किनात मदीना और उहद के मध्य मदीना की तीन प्रसिद्ध वादियों में से एक वादी है।

(अलसीरतुल नबविया लेइब्ने ह्शाम पृष्ठ 522 दारुल कुतुब इल्मिया बेरूत)

(फ़र्हंग सीरत पृष्ठ 239,216,146,87 ज़व्वार अकैडमी कराची)

(सीरत हल्बिया भाग 2 पृष्ठ 296 प्रकाशन दारुल कुतुब इल्मिया बेरूत)

यह उसका ठहरे का स्थान है जंग की तफ़सीलात के बारे में मज़ीद लिखा है कि हज़रत अब्बास रज़ियल्लाहु अन्हो ने रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम को लश्कर क़ुरैश के मुताल्लिक़ मालूमात फ़राहम कीं और अम्र बिन सालिम ने रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम को मुशरेकीन मक्का की रवानगी की इत्तिला पहुंचाई। इस पर अबूसुफ़ियान हवास बाख़ता हो गया, उस को पता लग गया। हुआ यूं कि अम्र बिन सालिम अपने चंद साथियों के साथ मुक़ाम ज़ी तूआ से लश्कर क़ुरैश से अलैहदा हो कर जल्दी जल्दी मदीना पहुंचा और आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम को लश्कर कुफ़्फ़ार की चढ़ाई की ख़बर दी। अम्र बिन सालिम का यह दस्ता मदीना से वापसी पर अब्वा के मुक़ाम पर अबूसुफ़ियान के लश्कर से रात के वक़्त आगे निकल गया। अर्थात वह वहां थे तो उनको क्रास कर गया। सुबह हुई तो अबूसुफ़ियान मक्का की तरफ़ वापस चला गया। अबूसुफ़ियान को रस्ते में बताया गया कि अम्र बिन सालिम अपने चंद साथियों के हमराह शाम के वक़्त मक्का की तरफ़ निकल गया है। अबू सुफ़ियान घबराते बोला : मैं अल्लाह की क़सम खा कर कहता हूँ कि यह ज़रूर मुहम्मद सल्ल-ल्लाहो अलैहि वसल्लम के हाँ जा कर उसे हमारी पेशक़दमी की इत्तिला देकर आया है। उसने उसे अर्थात आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम को हमारे मुताल्लिक़ समस्त मालूमात फ़राहम कर दी हैं और उसे पहले से ही चौकन्ना कर दिया है। अब हमारे पहुंचने से पहले ही मुस्लमान ख़ुद को क़िलों में महफ़ूज़ कर चुके होंगे। इस तरह तो हम उनका कोई नुक़्सान नहीं कर सकेंगे और न हम अपने मक़सद में सफ़ल होंगे। सफ़वान बिन अमय फ़ौरी बोला कि अगर वे क़िलों से बाहर मैदान में हमारे साथ मुक़ाबले के लिए नहीं निकलेंगे तो घबराने की कोई ज़रूरत नहीं है। हम ओस और ख़ज़रज की ख़जूरों के बाग़ काट लेंगे जिसका वह कभी अज़ाला नहीं कर सकेंगे और वह अपने माल-ओ-ग़ल्ला से हाथ धो बैठेंगे और अगर वह सहरा में लड़ाई के लिए क़िलों से बाहर आ निकले तो भी परेशान होने की चंदाँ ज़रूरत नहीं। हमारी संख्या उनकी संख्या से कहीं ज़्यादा है। हमारे असलेह से भी उनके असलाह का कोई जोड़ नहीं। उनके पास घोड़े नहीं हमारे पास तो बहुत घोड़े हैं। हम जंग में उनका जानी और माली नुक़्सान करने की ताक़त रखते हैं जबकि वे हम से यूं नहीं लड़ सकते।

(दायरा मआरिफ़ सीरत मुहम्मद रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम भाग 6 पृष्ठ 443-444 नाशिर बज़म-ए-इक़बाल लाहौर 2022 ई.)

यह उन्होंने अपना ख़्याल ज़ाहिर किया है। बहरहाल मदीना की तरफ़ पेशक़दमी करते हुए क़ुरैश ने जब अब मुक़ाम पर पड़ाव डाला तो हिंद बिंत उत्बा ने अबूसुफ़ियान को कहा कि तुम लोग मुहम्मद सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की माता की क़ब्र को खोद डालो क्योंकि उनकी क़ब्र अबवा में है। अगर वह तुम्हारे किसी एक आदमी को क़ैद करें तो तुम हर शख़्स के फ़िद्या में उनकी माता का एक उज़ू दे देना। अजीब शैतानी मश्वरा था। अबूसुफ़ियान ने यह बात क़ुरैश को कही और कहा यह एक राय है तो क़ुरैश ने जवाब दिया कि तुम इस दरवाज़े को न खोलो अन्यथा बनू बक्र हमारे मुर्दों की क़ब्रें खोदेंगे।

(सबलुल् हुदा वल् रिशाद भाग 4 पृष्ठ 183 दारुल कुतुब इल्मिया)

यह बड़ी ख़तरनाक राय है यह न मानो। बहरहाल ये लोग रास्ते में जहां भी पड़ाव करते वहां ऊंट ज़बह किए जाते। ख़वातीन शेअर पढ़ कर ख़ूब जोश मे आतीं। शराब से भरे जाम पेश करतीं। मरसिए पढ़ कर ख़ुद भी आह-ओ-फ़ुग़ां करतीं, दूसरों को भी डरातीं और जोश दिलातीं।

(दायरा मआरिफ़ सीरत मुहम्मद रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम भाग 6 पृष्ठ 441 नाशिर बज़म इक़बाल लाहौर 2022 ई.)

कुफ़्फ़ार का यह क़ाफ़िला इसी तरह आगे बढ़ता रहा। और दूसरी ओर मुस्लमान भी अपने तौर पर तैयारी में थे इस बारे में लिखा है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फ़ज़ालह के बेटों अनस और मोनिस को जुमेरात की रात शवाल के पहले अशरा में जासूसी के लिए भेजा।

(सबलुल् हुदा भाग 4 पृष्ठ 183 प्रकाशन दारुल कुतुब इल्मिया बेरूत)

"ग़ालिबन इसी अवसर पर आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने मुस्लमानों की संख्या और ताकत मालूम करने के लिए यह भी इरशाद फ़रमाया कि मदीना की समस्त मुस्लमान आबादी की मर्दुम-शुमारी की जाए। इसलिए मर्दुम-शुमारी की गई तो मालूम हुआ कि इस वक़्त तक कुल पंद्रह सौ मुस्लमान मुतनफ़्फ़िस हैं। इस वक़्त के हालात के मातहत इसी संख्या को बहुत बड़ी संख्या समझा गया। इसलिए कुछ सहाबा रज़ि-यल्लाहु अन्हो ने तो उस वक़्त ख़ुशी के जोश में यहां तक कह दिया कि क्या अब भी जबकि हमारी संख्या डेढ़ हज़ार तक पहुंच गई है हमें किसी का डर हो सकता है? परंतु इन्ही में से एक सहाबी कहते हैं कि इस के बाद हम पर ऐसे ऐसे सख़्त वक़्त आए कि बाज़-औक़ात हमें नमाज़ भी छुप कर अदा करनी पड़ती थी। एक अवसर पर इस से पहले भी आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने मुस्लमानों की मर्दुम-शुमारी करवाई थी तो उस वक़्त छः और सात सौ के मध्य संख्या थी।"

(सीरत ख़ातिम नबिय्यीन सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम अज़ हज़रत साहिबज़ादा मिर्ज़ा बशीर अहमद रज़ियल्लाहु अन्हो एम.ए पृष्ठ 483)

बहरहाल दोनों सहाबा रज़ियल्लाहु अन्हो जिनको आप सल्लल्लाहो अलैहि वस-ल्लम ने ख़बर-गीरी के लिए भेजा था मुक़ाम अकीक में क़ुरैश को जा मिले और वापस रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के पास आ गए और उनको काफ़िरों के लश्कर की ख़बर दी। यह अक़ीक़ जो है इस नाम की भी जज़ीर अल् राबे में कई वादियां हैं और सबसे अहम वादी मदीना की वादी अक़ीक़ है जो मदीना के जुनूब मग़रिब से शुमाल मशरिक़ तक फैली हुई है और इस में मदीना मुनव्वरा की सारी वादियां आकर शामिल हो जाती हैं। (फ़र्हंग सीरत पृष्ठ 204 ज़व्वार अकैडमी कराची)

बहरहाल इन दोनों ने आ के बताया कि इन कुफ़्फ़ार के लश्कर ने अपने ऊंट और घोड़े मुक़ाम उरीज़ की खेती में छोड़े हैं। उरीज़ भी मदीना से तीन मील के फ़ासिला पर एक नख़लिस्तान है।

(इन्साईकलोपीडिया भाग 6 पृष्ठ 65-66)

उन्होंने वहां कोई सब्ज़ा नहीं छोड़ा सब कुछ चर गए हैं। मुशरेकीन बुध के दिन वादी कनात पर उतरे। जुमेरात और जुमा के दिन उनके ऊंट इस वादी का सब्ज़ा खाते रहे। उन्होंने कोई सब्ज़ा न छोड़ा। फिर रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने

हुबाब बिन मुनज़िर को भी उनकी तरफ़ भेजा। उन्होंने उनको देखा और लौट आए और उनकी संख्या और सामान का अंदाज़ा किया तो रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया तुम उनकी हालत किसी को न बताना। حَسْبُنَا اللّٰهُ وَنِعْمَ الْوَكِيْلُ۔ اَللّٰهُمَّ بِكَ أَجُوْلُ وَبِكَ أَصُوْلُ हमें अल्लाह काफ़ी है और वह अच्छा कारसाज़ है। हे अल्लाह! तेरे साथ ही में चक्कर लगाता हूँ और तेरे साथ ही में हमला करता हूँ। और ओस और ख़ज़रज के सरदारों हज़रत साद बिन माज़ रज़ियल्लाहु अन्हो, हज़रत उसैद बिन हुज़ैर रज़ियल्लाहु अन्हो और हज़रत साद बिन उबादाह रज़ियल्लाहु अन्हो ने मुशरेकीन के रात के हमले के ख़तरे की वजह से जुमा की रात को हथियारों से लैस हो कर मस्जिद में रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के दरवाज़े पर गुज़ारी और मदीना का भी सुबह तक पहरा दिया।

(सबलुल् हुदा वल् रिशाद भाग 4 पृष्ठ 183-184 दारुल कुतुब इल्मिया बेरूत)

(सीरत हल्बिया भाग 2 पृष्ठ 297 दारुल कुतुब इल्मिया बेरूत)

मुशरेकीन मक्का के लश्कर ने मुस्लमानों के मदीना से ख़ुरूज से क़बल वादी केनका की नमकीन और दलदली ज़मीन पर पड़ाव किया था। (उद्धृत ग़ज़वा उहद अज़ मुहम्मद अहमद बाशमील पृष्ठ : 97)

मदीना मुनव्वरा के मशरिक़ और मग़रिब और जुनूब में खजूर के घने बाग़ थे उनमें से गुज़रते हुए किसी बस्ती या मुहल्ले पर हमला आसान नहीं था क्योंकि बाग़ों में दुश्मन का केवल एक एक आदमी बमुश्किल आगे बढ़ सकता था। इस सूरत में हमला-आवर बाआसानी मारे जाते। केवल शुमाल से हमला हो सकता था इसलिए क़ुरैश ने शुमाली और मग़रिबी जानिब पड़ाव डाला था। फिर पूरी आबादी एक मुक़ाम पर न थी बल्कि पहाड़ों के मध्य वसीअ मैदान में बिखरी हुई बस्तियां या मुहल्ले आबाद थे। कुछ क़बायल ने अपनी ज़मीनों और बाग़ों के पास आबादी का इंतेज़ाम कर लिया था और कई दो मंज़िला गढ़ीयाँ बना ली गई थीं। वह हर ख़तरे के वक़्त बच्चों और औरतों को गढ़ियों की बालाई मंज़िल पर पहुंचा देते और ख़ुद फ़ारिगुलबाल हो कर हमला आवरों का मुकाबला करते।

(ग़ज़वतुन्नबी सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम अज़ मौलाना अबुल-कलाम आज़ाद पृष्ठ 63-64)

एक और सीरत निगार लिखता है कि दुश्मन की फ़ौज ने मुस्लमानों की फ़ौज के मध्य और मदीना के मध्य जिस में मुनाफ़ेक़ीन, यहूद और जंग से आजिज़ मुस्लमानों और औरतों और बच्चों के सिवा कोई शख़्स बाक़ी न रहा था रुकावट डालते हुए सुबह की।

(उद्धृत ग़ज़वा उहद अज़ मुहम्मद अहमद बाशमील पृष्ठ 99)

हज़रत मिर्ज़ा बशीर अहमद रज़ियल्लाहु अन्हो उस की तफ़सील में लिखते हैं कि ग़ालिबन रमज़ान 3 हिज्री के आख़िर या शवाल के शुरू में क़ुरैश का लश्कर मक्का से निकला। लश्कर में दूसरे क़बायल अरब के बहुत से बहादुर भी शामिल थे। अबू सुफ़ियान सरदार लश्कर था। लश्कर की संख्या तीन हज़ार थी जिसमें सात सौ ज़िरह पोश शामिल थे। सवारी का सामान भी काफ़ी था। अर्थात दो सौ घोड़े और तीन हज़ार ऊंट थे। सामान हर्ब भी काफ़ी था। औरतें भी साथ थीं हिंद पत्नी अबूसुफ़ियान और अकरमा बिन अबुजहल, सफ़वान बिन अमय, ख़ालिद बिन वलीद और दूसरे लोगों की बीवीयां थीं। ये औरतें अरब की क़दीम रस्म के अनुसार गाने बजाने का सामान अपने साथ लाई थीं ताकि इश्तिआल अंगेज़ अशआर गा कर और दफ़ें बजा कर अपने मर्दों को जोश दिलाती रहें। क़ुरैश का यह लश्कर दस ग्यारह दिन के सफ़र के बाद मदीना के पास पहुंचा और चक्कर काट कर मदीना के शुमाल की तरफ़ उहद की पहाड़ी के पास ठहर गया। इस जगह के क़रीब ही उरया का सरसब्ज़ मैदान था जहां मदीना के मवेशी चरा करते थे और कुछ खेती बाड़ी भी होती थी। क़ुरैश ने सबसे पहले इस चरागाह पर हमला करके इस में मन-मानी की और ग़ारत मचाई। जब आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम को अपने मुख़बिरों से लश्कर के क़रीब आ जाने की सूचना प्राप्त हुई तो आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने अपने एक सहाबी हुबेब बिन मूजिर रज़ियप ल्लाहु अन्हो को रवाना फ़रमाया कि जाकर दुश्मन की संख्या और इस का पता करें और फिर यह भी आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फ़र्मा दिया कि अगर दुश्मन की ताक़त ज़्यादा हो और मुस्लमानों के लिए ख़तरा की सूरत हो तो जैसा कि पहले वर्णन हो चुका है आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया कि वर्णन नहीं करना बल्कि अलैहदगी में मुझे इत्तिला देनी है ताकि मुस्लमानों में बददिली न फैले। बहरहाल हुबाब रज़ियल्लाहु अन्हो ख़ुफ़ीया रास्ते से गए और निहायत होशयारी से थोड़ी देर में वापस आ गए और आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम से सारी सूरत-ए-हाल अर्ज़ की। अब लश्कर की आमद की ख़बर मदीना में फैल चुकी थी और एरीज़ पर जो उन का हमला था उस की इत्तिला भी आम हो चुकी थी किस तरह उन्होंने बाग़ उजाड़ा है। जबकि आम लोगों के लश्कर कुफ़्फ़ार के तफ़सीली हालात का इलम नहीं दिया गया परंतु फिर भी ये रात मदीना में सख़्त ख़ौफ़ और ख़तरा की हालत में गुज़री। ख़ास ख़ास सहाबा रज़ियल्लाहु अन्हो ने सारी रात आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के मकान के इर्दगिर्द पहरा दिया।

(उद्धृत सीरत ख़ातिम नबिय्यीन सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम अज़ हज़रत साहिबज़ादा मिर्ज़ा बशीर अहमद रज़ियल्लाहु अन्हो एम. ए पृष्ठ 483-484)

जब जंग-ए-अहद की तैयारी के लिए मुशावरत हुई तो इसी दौरान रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया कि रात मैंने एक ख़ाब देखी है।

कि एक गाय है जो ज़बह की जा रही है और अपनी तलवार अर्थात ज़ुल्फ़क़ार की धार में मैं ने दंदाना पड़ा देखा है। एक रिवायत में ये लफ़्ज़ है कि मेरी तलवार का दस्ता टूट गया है। एक रिवायत में यूं है कि मैंने देखा मेरी तलवार ज़ुल्फ़क़ार में दस्ता के पास दराड़ आगई है। ये दोनों बातें किसी मुसीबत की तरफ़ इशारा कर रही हैं। फिर मैंने देखा कि मैं एक मज़बूत ज़िरह में हाथ डाल रहा हूँ। एक रिवायत में यूं है कि मैं एक मज़बूत ज़िरह पहने हुए हूँ और मैं एक मेंढे पर सवार हूँ। सहाबा रज़ियल्लाहु अन्हो ने आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम से पूछा कि आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने इस की क्या ताबीर फ़रमाई है? आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम फ़रमाया : जहां तक गाय का ताल्लुक़ है तो इस से यह इशारा है कि मेरे कुछ सहाबा रज़ियल्लाहु अन्हो शहीद होंगे। एक रिवायत में यूं है कि ज़बह होने वाली गाय से यह ताबीर ली है कि हम में से कुछ शहीद होंगे। और जहां तक मेरी तलवार में दराड़ का ताल्लुक़ है तो इस से यह इशारा है कि मेरे घर वालों या ख़ानदान में से कोई शख़्स क़तल होगा। एक रिवायत में यह लफ़्ज़ है कि मेरी तलवार की धार में दंदानों का मतलब है कि नुक़्सान तुम लोगों में से किसी का नहीं होगा अर्थात ग़ैर ख़ानदान वालों में से नहीं होगा। यहां फ़ुलूल का शब्द प्रोयग हुआ है जिसके अर्थ हैं तलवार की धार का कहीं से कुंद हो जाना या फिर तलवार के दस्ता में शिगाफ़ पड़ना या उसका टूट जाना और यह इस बात की अलामत है कि दो हादिसे पेश आएँगे। और मज़बूत ज़िरह का मतलब मदीना है। और मेंढे से मुराद है कि मैं दुश्मन के हामियों को क़तल करूँगा।

बहरहाल आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने इस बात पर मश्वरा मांग इब्ने उत्बा, इब्ने इसहाक़ और इब्ने साद इत्यादि वर्णन करते हैं कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने यह ख़ाब जुमा की रात को देखा। जब सुबह हुई तो आप सहाबा रज़ियल्लाहु अन्हो किराम के पास तशरीफ़ लाए। अल्लाह तआला की प्रशंसा की। फिर अपना ख़ाब वर्णन किया और फ़रमाया अगर तुम्हारी राय हो तो मदीना में क़ियाम करो और औरतों और बच्चों को हम क़िलों में पहुंचा दें। अगर वो लोग बाहर ठहरेंगे तो बुरी जगह पर ठहरेंगे और अगर हमारे शहर में दाख़िल होंगे तो हम गलीयों मैं उनसे लड़ाई करेंगे और हम उन के रास्ते उन से ज़्यादा जानते हैं और टीलों के ऊपर से भी उन पर पथराओ इत्यादि किया जाएगा। इन लोगों ने हर तरफ़ से मदीना को तामीर के ज़रीया से महफ़ूज़ कर दिया था। मदीना एक क़िला की तरह था। रसूलुल्लाह सल्ल-ल्लाहो अलैहि वसल्लम ने जो राय दी यही अकाबिर मुहाजिरीन और अंसार की राय थी और अब्दुल्लाह बिन उबै ने भी यही राय दी। जबकि मुस्लमानों की एक जमाअत ने कहा जिनमें अक्सरीयत नौजवान सहाबा रज़ियल्लाहु अन्हो की थी और ये लोग बदर में शरीक ना हो सके थे और शहादत के ख़ाहिशमंद थे और दुश्मन से लड़ने के ख़ाहां थे कि या रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम!आप हमें लेकर मदीना से बाहर दुश्मन के पास चलें। वो ये ना समझें कि हम बुज़दिल हो गए हैं। अब्दुल्लाह बिन उबय्य ने कहा या सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम! मदीना में ठहरें। मदीना से बाहर न निकलें। अल्लाह की क़सम हम जब भी मदीना से बाहर दुश्मन से लड़े हैं तो शिकस्त खाई है और जब भी मदीना में कोई दुश्मन लड़ने आया है तो हम फ़त्हयाब हुए।

(उद्धृत सीरत हल्बिया भाग 2 पृष्ठ 297-298 दारुल कुतुब इल्मिया बेरूत)

(सबलुल् हुदा भाग 4 पृष्ठ 185 दारुल कुतुब इल्मिया बेरूत)

हमज़ा बिन अब्दुल मुत्लिब रज़ियल्लाहु अन्हो, साद बिन उबादह रज़ियल्लाहु अन्हो और नुअमान बिन मालिक रज़ियल्लाहु अन्हो ने भी कहा हे रसूलुल्लाह! हमें यह डर है कि अगर हम मदीना से बाहर न निकले तो दुश्मन यह समझेगा कि हम उनसे लड़ने से बुज़दिल हो गए हैं इस वजह से बाहर नहीं निकले तो इस वजह से उनकी हमारे ख़िलाफ़ जुर्रत बढ़ेगी और बदर में आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम तीन सौ अफ़राद के साथ थे तो अल्लाह तआला ने आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम को उन पर फ़तह दी और आज हम कसीर संख्या में हैं।

इयास बिन ओसब बिन अतीक रज़ियल्लाहु अन्हो ने कहा बनू अब्दुल अशहल उम्मीद करते हैं कि ज़बह की हुई गाय हम लोग हों। जो ख़ाब में देखा था कि गाय ज़बह की जा रही, उन्होंने कहा कि हम उम्मीद करते हैं कि गाय हम हों। और उनके इलावा दूसरों ने कहा यह दो अच्छाईयों में से एक है, कामयाबी या शहादत। अल्लाह की क़सम अरब यह लालच न करें कि वह हमारे घरों में दाख़िल हो जाऐंगे। हज़रत हमजा रज़ियल्लाहु अन्हो ने कहा उसकी क़सम जिसने आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम पर किताब नाज़िल की मैं आज खाना नहीं खाऊंगा जब तक मदीना से बाहर निकल कर में अपनी तलवार से उनके साथ न लड़ों। इसलिए वह जुमा और हफ़्ता के दिन रोज़े से

EDITOR
SHAIKH MUJAHID AHMAD
Editor : +91-9915379255
e -mail : badarqadian@gmail.com
www.akhbarbadr.in

REGISTERED WITH THE REGISTRAR OF THE NEWSPAPERS FOR INDIA AT NO RN PUNHIN/2016/70553
Weekly BADAR Qadian
Qadian - 143516 Distt. Gurdaspur (Pb.) INDIA
POSTAL REG. No.GDP 45/ 2023-2025 Vol. 09 Thursday 25 January 2024 Issue No. 4

MANAGER :
SHAIKH MUJAHID AHMAD
Mobile : +91-9915379255
e -mail:managerbadrqnd@gmail.com
www.alislam.org/badr

रहे और जब शहीद हुए तो वह रोज़ा से थे।

(किताब अल्मग़ाज़ी लिल् वाकदी भाग 1 पृष्ठ 194)

नोमान बिन मलिक रज़ियल्लाहु अन्हो ने अर्ज़ क्या हे रसूलुल्लाह! हमें जन्नत से महरूम न करें। उस की क़सम जिसके क़बज़ा क़ुदरत में मेरी जान है मैं जन्नत में ज़रूर दाख़िल हूँगा। तो रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया क्योंकर? उसने कहा क्योंकि मैं अल्लाह तआला और उस के रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम से मुहब्बत करता हूँ और एक रिवायत में है। मैं गवाही देता हूँ कि अल्लाह के सिवा कोई माबूद नहीं है और बेशक मुहम्मद अल्लाह के रसूलुल्लाह हैं और मैं जंग के दिन नहीं भागूँगा। तो रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने इरशाद फ़रमाया तू ने सच्च कहा है। वह इस जंग में शहीद हो गए। मलिक बिन सिनान ख़ुदरी और इयास बिन अतीक़ और एक जमाअत ने लड़ाई के लिए निकलने पर ख़ूब तरग़ीब दिलाई।

(सबलुल् हुदा वल् रिशाद भाग 4 पृष्ठ 186 दारुल कुतुब इल्मिया बेरूत)

हज़रत मिर्ज़ा बशीर अहमद रज़ियल्लाहु अन्हो ने भी सीरत ख़ातिम नबिय्यीन सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम में इस की तफ़सील लिखी है कि :

आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने मुस्लमानों को जमा कर के उनसे क़ुरैश के हमला के मुताल्लिक़ मश्वरा मांगा कि जबकि मदीना में ही ठहरा जाए या बाहर निकल के मुक़ाबला किया जाए। मश्वरा से क़बल आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने क़ुरैश के हमले और उन के ख़ूनी इरादों का वर्णन फ़रमाया और फ़रमाया कि आज रात मैंने ख़ाब भी देखी है और फिर वह ख़ाब सुनाई जिसका अभी वर्णन हो चुका है। सहाबा रज़ियल्लाहु अन्हो के ताबीर पूछने पर आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया कि गाय के ज़बह होने से तो मैं यह समझता हूँ कि मेरे सहाबा रज़ियल्लाहु अन्हो में से कुछ का शहीद होना मुराद है।और मेरी तलवार के किनारे के टूटने से मेरे अज़ीज़ों में से किसी की शहादत की तरफ़ इशारा मालूम होता है या शायद ख़ुद मुझे इस मुहिम में कोई तकलीफ़ पहुंचे। और ज़िरह के अंदर हाथ डालने से मैं यह समझता हूँ कि इस हमला के मुक़ाबला के लिए हमारा मदीना के अंदर ठहरना ज़्यादा मुनासिब है।और मेंढे पर सवार होने वाले ख़ाब की आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने यह तावील फ़रमाई कि इस से कुफ़्फ़ार के लश्कर का सरदार अर्थात अलमबरदार मुराद है जो इन शा अल्लाह मुस्लमानों के हाथों से मारा जाएगा। इसके बाद आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने सहाबा रज़ियल्लाहु अन्हो से मश्वरा तलब किया कि मौजूदा सूरत-ए-हाल में क्या करना चाहिए? और जैसा कि पहले वर्णन हो चुका है सहाबा रज़ियल्लाहु अन्हो ने आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की ख़ाब से मुतास्सिर हो कर या वैसे हालात देखकर यही मश्वरा दिया कि मदीना में ठहर के मुक़ाबला किया जाए। आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने भी इसी राय को पसंद किया लेकिन अक्सर सहाबा रज़ियल्लाहु अन्हो ने जो खासतौर पर नौजवान थे, जो बदर की जंग में शामिल नहीं हुए थे और अपनी शहादत से ख़िदमत-ए-दीन का अवसर हासिल करने के लिए बे-ताब थे, बड़े इसरार के साथ अर्ज़ किया कि शहर से बाहर निकल कर खुले मैदान में मुक़ाबला करना चाहिए। इन लोगों ने इस क़दर इसरार किया और अपनी राय पेश की कि आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने उनके जोश को देख कर उन की बात मान ली और फ़ैसला फ़रमाया कि हम खुले मैदान में निकल कर कुफ़्फ़ार का मुक़ाबला करेंगे और फिर जुमा की नमाज़ के बाद आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने मुस्लमानों में आम तहरीक फ़रमाई कि जिहाद फ़ी सबीलिल्लाह की ग़रज़ से इस ग़ज़वा में शामिल हो कर सवाब हासिल करें।

(उद्धृत सीरत ख़ातमन नबिय्यीन सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम से हज़रत मिर्ज़ा बशीरुद्दीन महमूद अहमद साहब एम.ए रज़ियल्लाहु अन्हु पृष्ठ 484 से 485)

तो इस की यह बाक़ी तफ़सील इन शा अल्लाह आइन्दा वर्णन होगी।

फिलिस्तीनियों के लिए दुआएं करते रहें। जंग बंदी ख़त्म होने के बाद फिर उन पर बिला तफ़रीक़ बमबारी होगी और फिर मासूम शहीद होंगे। कितना ज़ुलम होगा? अल्लाह बेहतर जानता है। उनके मुस्तक़बिल के बारे में बड़ी ताक़तों के इरादे जो हैं वह बड़े ख़तरनाक हैं। इसलिए उनके लिए बहुत दुआओं की ज़रूरत है। अल्लाह तआला रहम फ़रमाए।

★ ★ ★

सदर अंजुमन अहमदिया क़ादियान में ख़िदमत की इच्छा रखने वाले ध्यान दें

सदर अंजुमन अहमदिया क़ादियान की वैकेंसी दर्जा दोम के लिए शर्तें

(1) अभ्यर्थी की आयु 25 वर्ष से अधिक और 18 वर्ष से कम न हो। (2) अभ्यर्थी की शिक्षा कम से कम 10+2 45% फ़ीसद नंबरात के साथ होनी चाहिए। (3) अभ्यर्थी उर्दू/अंग्रेज़ी कम्पोज़िंग जानता हो और तेज़ी 25 शब्द प्रति मिनट हो। (4) इस ऐलान के बाद 2 माह के अंदर जो निवेदन प्राप्त होंगें उन्हीं पर ग़ौर होगा। (5) निसाब परीक्षा कमीशन बराए कारकुनान दर्जा दोम निम्नलिखित है। परीक्षा के प्रत्येक भाग में सफल होना अनिवार्य है।

प्रथम भाग

★ क़ुरआन-ए-करीम नाज़रा मुकम्मल। पहला पारः अनुवाद सहित चालीस जवाहर पारे, अरकान-ए-इस्लाम, पूर्ण नमाज़ अनुवाद सहित। (30 अंक)

द्वितीय भाग

★ कशती-ए-नूह, बरकातुद-दुआ, दीनी मालूमात जमाअत अहमदिया के अकायद के विषय में मजमून, दुर्रे समीन से नज़्म (शान-ए--इस्लाम) (20 अंक)

तृतीय भाग

★ अंग्रेज़ी भाषा इंटरमीडीयेट के मयार के अनुसार (10+2) (20 अंक)

चतुर्थ भाग

★ हिसाब मैट्रिक के मयार के अनुसार (दफ़्तरी इमपरस्ट से संबधित प्रश्न) (20 अंक)

पंचम भाग

★ साधारण ज्ञान (G.K) (10 अंक)

(6) लिखित परीक्षा में सफल होने वाले अभ्यर्थीयों का ही इंटरव्यू होगा। (7) लिखित परीक्षा, कम्पयूटर टैस्ट और इंटरव्यू में सफलता की सूरत में अभ्यर्थी को नूर हस्पताल क़ादियान से चिकित्सा परीक्षण करवाना होगा और केवल वही अभ्यर्थी ख़िदमत के योग्य होंगे जो नूर हस्पताल की तिब्बी बोर्ड की रिपोर्ट के अनुसार सेहत मंद और तंदरुस्त होंगे। (8) स्लैक्शन की सूरत में अभ्यर्थी को क़ादियान में अपने रहने का इंतेज़ाम स्वयं करना होगा। बाद में रहने के संबंध में किसी निवेदन पर कोई कारवाई नहीं होगी। (9) सफ़र ख़र्च क़ादियान आना जाना अभ्यर्थी के अपने ज़िम्मा होंगा।
(नोट : लिखित परीक्षा और इंटरव्यू की तिथि से अभ्यर्थी को बाद में अवगत किया जाएगा।)

★ ★ ★

सदर अंजुमन अहमदिया, अंजुमन तहरीक-ए-जदीद, अंजुमन वक़्फ़-ए-जदीद क़ादियान के विभाग में बतौर ग्रेड दर्जा चहारुम बराए माली/केयरटेकर/चौकीदार/बावर्ची/नानबाई के लिए शर्ते

(1) अभ्यर्थी की आयु 40 वर्ष से ज़ायद और 18 वर्ष से कम न हो। (2) अभ्यर्थी की तालीम की कोई शर्त नहीं है जबकि पढ़े लिखे अभ्यर्थी को प्राथमिकता दी जाएगी। (3) जन्म प्रमाण पत्र प्रस्तुत करना ज़रूरी होगा। (4) इस ऐलान के बाद 2 माह के अंदर जो निवेदन प्राप्त होंगी उन्हीं पर ग़ौर होगा। (5) वही अभ्यर्थी ख़िदमत के लिए जाऐंगे जो मर्कज़ी कमेटी बराए भर्ती कारकुनान के इंटरव्यू में सफल होंगे। (6) इंटरव्यू में सफलता की सूरत में अभ्यर्थी को नूर हस्पताल क़ादियान से चिकित्सा परीक्षण करवाना होगा और केवल वही अभ्यर्थी ख़िदमत के योग्य होंगे जो नूर हस्पताल के तिब्बी बोर्ड की रिपोर्ट के मुताबिक़ सेहतमंद और तंदरुस्त होंगे।
(7) स्लैक्शन की सूरत में अभ्यर्थी को क़ादियान में अपनी रिहायश का इंतेज़ाम स्वयं करना होगा। (8) क़ादियान आने जाने का सफ़र ख़र्च अभ्यर्थी के अपने ज़िम्मा होंगा।
(नोट : लिखित परीक्षा और इंटरव्यू की तिथि से अभ्यर्थी को बाद में अवगत किया जाएगा।)

अधिक जानकारी के लिए संपर्क करें।
नज़ारत दीवान सदर अंजुमन अहमदिया क़ादियान पिन कोड 143516
मोबाइल : 09682627592, 09682587713, दफ़्तर01872-501130
E-mail: diwan@qadian.in

★ ★ ★

Printed & Published by: Jameel Ahmed Nasir on behalf of Nigran Board of Badar. Name of Owner: Nigran Board of Badar. And printed at Fazle-Umar Printing Press. Harchowal Road, Qadian, Distt. Gurdaspur-143516, Punjab. And published at office of the Weekly Badar Mohallah - Ahmadiyya, Qadian Distt. Gsp-143516, Punjab. India. Editor:Shaikh Mujahid Ahmad